वर्ष : 13 • अंक : 12 • पृष्ठ : 84 • जयपुर
www.shaikshikmanthan.com

शैक्षिक मंथन संस्थान

ISSN 2581- 4133
आषाढ़, विक्रम संवत् 2078
1 जुलाई 2021 • ₹ 25/-

शैक्षिक मंथन

शैक्षिक क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

राष्ट्रीय एकात्मता के तीर्थ

सदस्य - संपादक मंडल
आलेख — 1

प्राचार्य
महाविद्यालय
(अलवर) राज.

Coordinator
IQAC CELL
GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

शैक्षिक मंथन

(हिन्दी मासिक)

शैक्षिक क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष : 13 अंक : 12 1 जुलाई 2021

आषाढ़, विक्रम संवत् 2078

संस्थापक

स्व. मुकुन्दराव कुलकर्णी

परामर्श

के.नरहरि

डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल

जगदीश प्रसाद सिंघल

शिवानन्द सिन्दनकेरा

सम्पादक

डॉ. राजेन्द्र शर्मा

सह सम्पादक

भरत शर्मा

संपादक मंडल

प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय

डॉ. एस.पी. सिंह

डॉ. ओमप्रकाश पारीक

डॉ. शिवशरण कौशिक

प्रबंध सम्पादक

महेन्द्र कपूर

व्यवस्थापक

बजरंग प्रसाद मजेजी

प्रेषण प्रभारी : नौरंग सहाय

कार्यालय प्रभारी :

आलोक चतुर्वेदी : 8619926401

प्रकाशकीय कार्यालय

82, स्टेशन कॉलोनी, गणेश मन्दिर मार्ग, जयपुर (राजस्थान) 302001

दूरभाष : 9414040401

दिल्ली ब्यूरो :

शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13

कृष्णा गली नं.9, मौजपुर, दिल्ली-110053

दूरभाष : 011-22914799

E-mail :

shaikshikmanthan@gmail.com

Visit us at :

www.shaikshikmanthan.com

एक प्रति ₹ 25/- वार्षिक शुल्क ₹ 250/-

आजीवन (दस वर्ष) ₹ 2000/-

पृष्ठ संयोजन : शारदा कम्प्यूटर, जयपुर

शैक्षिक मंथन मासिक में प्रकाशित सामग्री से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है तथा किसी का प्रतिनिधित्व स्वीकार किया गया है।

4. सम्पादकीय - डॉ. राजेन्द्र शर्मा

5. हमारे तीर्थ - स्वरूप एवं महत्त्व - डॉ. [illegible]

8. तीर्थ यात्रा से शिक्षा - योगी [illegible]

11. भारत की संस्कृति और तीर्थ स्थल - [illegible]

13. भारत की सांस्कृतिक एकता के प्रतीक हमारे तीर्थ - डॉ. [illegible] सिंह सिन्हा

16. सामाजिक चेतना के उत्स हैं हमारे तीर्थस्थल - डॉ. [illegible] शर्मा

19. प्राचीन भारत में शिक्षा - तीर्थों की अद्वितीय परंपरा - डॉ. [illegible]

22. शैक्षिक अवलोकन : सांस्कृतिक धरोहर एवं तीर्थ स्थल - प्रो. [illegible] कुमार

25. सामाजिक सौहार्द और तीर्थ स्थल - डॉ. [illegible] भारद्वाज

27. भारतीय तीर्थों का सामाजिक सांस्कृतिक अवदान - डॉ. शिवशरण कौशिक

30. सामाजिक सौहार्द तथा राष्ट्रीय एकात्मकता ... - डॉ. [illegible] कुमार

32. राष्ट्रीय एकता के सूत्र में पिरोते भारतीय तीर्थ स्थल - डॉ. [illegible] कुमार

34. The Role of Pilgrimages In National Integrity - K. [illegible]

36. Role of Pilgrimages, Enhancing National... - Prof. Y.V. Rami Reddy

38. Ekatma Bharat through Dharmic Institutions... - Dr. [illegible] Kumar

40. कैलाश : पृथ्वी का भू-नाभिक व शीर्ष तीर्थ - प्रो. [illegible] प्रकाश शर्मा

43. राष्ट्रीय एकात्मता के अप्रतिम नायक आदि शंकराचार्य - डॉ. [illegible]

45. पूर्वोत्तर भारत के तीर्थ स्थल - प्रो. [illegible]

49. असम की 'सत्र' परम्परा तथा नववैष्णव तीर्थ - [illegible]

51. राष्ट्रीय एकात्मता का प्रतीक : विवेकानन्द शिला ... - [illegible] कुमार [illegible]

55. शिक्षा के विकास में कर्नाटक के तीर्थस्थलों का योगदान - [illegible]

58. भारतीय शिक्षा के विकास में उत्तराखण्ड के तीर्थ ... - डॉ. [illegible] प्रसाद [illegible]

60. जय सोमनाथ - [illegible]

63. विश्वगुरु के पथ पर अग्रसर अखंड भारत ... - प्रो. [illegible]

67. राष्ट्रीय एकात्मतामय राजस्थान के तीर्थ - ओम प्रकाश पारीक

70. लोक आस्था का केंद्र भर्तृहरि धाम - कंचन

72. हिंदुआनी हो रहुँगी मैं और ब्रज-मण्डल वैभव - प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय

76. भारतीय जनजीवन और कुंभ - प्रो. [illegible] प्रसाद शर्मा

78. बिहार-झारखंड के तीर्थस्थल - प्रो. [illegible] सिन्हा

81. जगन्नाथ का भात, जगत पसारे हाथ - डॉ. [illegible] कुमार रथ

दूसरों की भलाई के समान कोई धर्म नहीं,
दूसरों को पीड़ा पहुचाने से बड़ा कोई अधर्म नहीं।

(पर हित सरिस धर्म नहिं भाई, परपीड़ा सम नहिं अधमाई)

- तुलसीदास जी

Coordinator
IQAC-CELL
G[illegible] College, Rajgarh (Alwar) Raj.

प्राचार्य
[illegible] महाविद्यालय
[illegible] (अलवर) राज.

संपादकीय

डॉ. राजेन्द्र शर्मा
सम्पादक

सुदृढ़ होता है एवं एकात्मता की भावना का विकास होता है। इस अवसर पर ऋषि-मुनि, संत धर्माचार्य, समाज का नेतृत्व करने वाले लोग, राजनीतिक तथा चिंतक समाज व राष्ट्र की वर्तमान स्थितियों एवं समस्याओं तथा भविष्य के प्रश्नों पर

योगदान किया है। यद्यपि सम्मान करने की यह परम्परा समय के साथ शिथिल हो रही है। [illegible] करने वाला श्रद्धालु [illegible] जमीन [illegible] बना लेता है। [illegible] के अतिरिक्त

तापों से मुक्त हो जाता है। तीर्थ स्थलों का घनिष्ठ सम्बन्ध पाप-पुण्य से जुड़ा है। न केवल हिन्दू धर्म में वरन् सभी धर्मों में पाप-पुण्य की बात कही गयी हैं। वह कर्म जो प्राणों को पतित करे, जिससे तनाव पैदा हो वह पाप है, यह क्रिया नहीं परिणाम है, इससे मन में मलिनता पैदा होती है दूसरी ओर जो हमें प्रसन्नता का अनुभव कराये, शांति का अहसास कराये, प्राणों के पतन में नहीं, उर्ध्वगमन में सहायक हो पुण्य कहलाता है। पाप से उबारने, तारने और पार लगाने की प्रक्रिया को संस्कृत भाषा में तीर्थ कहा गया है। इस रूप में तीर्थ स्थलों का महत्त्व न केवल हिन्दू धर्म में है अपितु सभी धर्मों में पाया गया है। स्कन्द पुराण में तीन प्रकार के तीर्थ बताए गये हैं।

1. संत वेदज्ञ एवं गौ जंगम तीर्थ की श्रेणी में है यानि चलते फिरते तीर्थ।

2. पवित्र नदियों पर स्थित स्थान स्थावर तीर्थ की श्रेणी में आते हैं।

3. धैर्य, धर्म, सत्य, अहिंसा आदि चित्त शुद्धि, मानस तीर्थ की श्रेणी में है।

भारतीय संदर्भ में मानस तीर्थ को अधिक महत्त्व दिया गया है, जिसका घनिष्ठ सम्बन्ध अन्तःकरण की निर्मलता से है, तीर्थ स्थलों के द्वारा मानस तीर्थ की अभिव्यक्ति सदृढ़ होती है। जो उसे पाप की संकीर्ण, पतन की ओर ले जाने वाली वृत्ति से मुक्त करने में सहायक है। भारत में हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक तीर्थों की शृंखला बनी हुई है, मान्यता है

भारतीय संस्कृति का दायरा मात्र राष्ट्रीय स्तर तक की नहीं अपितु वैश्विक स्तर तक है। इस रूप में भारतीय संस्कृति विविधता में एकता को समेटे हुए है, इस विशाल आध्यात्मपरक संस्कृति की अभिव्यक्ति में तीर्थ-स्थलों का विशेष योगदान रहा है। तीर्थ शब्द संस्कृत भाषा का है, इसका अर्थ है पाप से तारने वाला पुराण वेदों में तीर्थों की महिमा इस रूप में उल्लेखित है, 'तरति पापादिक यस्मात्', अर्थात् जिसके द्वारा मनुष्य दैहिक, दैविक, और भौतिक पाप-तापों से मुक्त हो जाता है।

कि इस पवित्र वातावरण में प्रवेश करके मनुष्य निष्पाप हो जाता है। उसके अन्तर्मन में निहित मानस गुण दृढ़ होता है। तथा एकता का भाव जाग्रत होता है। और यह एकता का भाव सामाजिक समरसता, सौहार्द और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाता है। संस्कृति और विज्ञान का आपस में अविच्छेद सम्बन्ध है अर्थात् ये एक दूसरे के पूरक हैं। संस्कृति मानव के अन्तर्मन को परिष्कृत, परोपकारपूरित, समाज सेवा, सहयोग, सहानुभूतिपरक

बनाती है तो विज्ञान मानव को बाहरी रूप से मजबूती प्रदान करता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार जिस मनुष्य को आध्यात्मिक अनुभूति हो जाती है वह व्यक्ति अल्प साधनों से अपने हितों की पूर्ति कर सकता है। वह व्यक्ति हर तरह से सामाजिक, आर्थिक बंधनों से मुक्त हो जाता है, ऊँच नीच के भेदभाव से ऊपर उठ जाता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि मानव अपनी शक्ति को देशहित में सुदृढ़ बनाये और नैतिक मूल्यों को समझे तथा नैतिक अनुशासन से नियम बद्ध हो तभी उसकी भौतिकवादी संस्कृति पर अंकुश लग सकता है।

हिन्दू धर्म में कोई सम्प्रदाय ऐसा नहीं जिसके पवित्र धार्मिक तीर्थ भारत के विभिन्न भागों में बिखरे न हों और ये तीर्थ स्थल भारत की एकता के प्रतीक है। दक्षिण भारत के निवासी प्रयाग, हरिद्वार, काशी, अमरनाथ, बद्रीनाथ गमन करते हैं, वहीं उत्तरी भारत के लोग कांजीवरम्, नासिक, रामेश्वर, दर्शनार्थ जाते हैं। हिन्दू धर्म के समान बौद्धधर्म के तीर्थ-स्थल भी भारत के कोने-कोने में बिखरे हुए हैं। तीर्थ स्थलों के दर्शनार्थ एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाने से पारस्परिक रीति-रिवाज, रहन-सहन आचार-विचार का आदान प्रदान होता है, जिससे वैचारिक एवम् भावनात्मक एकात्मता विकसित होती है, जो निश्चय ही सामाजिक समरसता को सुदृढ़ बनाती है। भारतीय तीर्थ स्थल केवल भारतीयों के ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व एवं विश्व के मानवों के हैं जहाँ सम्पूर्ण विश्व से जनमानस अपनी श्रद्धा एवं आस्था को सुदृढ बनाता है।

भारत का आदर्श केवल भारत का नहीं अपितु विश्व मानव की साध्य वस्तु है। भारत का धर्म भारत का दर्शन, समग्र मानवजाति की विभिन्न समस्याओं का चरम समाधान है, धार्मिक स्थल न केवल धार्मिक चेतना के प्रतीक हैं बल्कि हमारी सामाजिक एकता, सौहार्द एवं समरसता को सुदृढ़ बनाते हैं, हमारे तीर्थ-स्थल हमारी सामाजिक, राष्ट्रीय चेतना व मानव कल्याण को मजबूत बनाते हैं। ❑

ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह
शोध पत्रिका

SANSKRITIK PRAVAH
Research Journal

वर्ष 8 अंक 2 अगस्त, 2021

Bi- annual Bi-lingual

··ulti Disciplinary Peer Reviewed (Refereed)
Research Journal
Dedicated to Socio-Cultural Harmony.

Coordinator
IQAC-CELL
GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर (राज.)
Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan

www.sanskritikpravah.com

राजकीय ... महाविद्यालय
राजगढ़ ... राज.

ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

शोध पत्रिका

SANSKRITIK PRAVAH

Research Journal

अनुक्रमणिका / CONTENTS

		पृष्ठ संख्या
	संपादकीय ...	8
1.	भारतीय नारी के चैतन्य की पुन: प्रकाशना में भक्ति आंदोलन का योगदान डॉ. धर्मचन्द चौबे	10
2.	इस्लाम का विस्तार एवं हिन्दू प्रतिरोध (आरंभ से 12वीं सदी तक) डॉ. पूनाराम	18
3.	राजस्थान का मध्यकालीन संत साहित्य डॉ. आशीष सिसोदिया	28
4.	राजगढ़ नीलकंठ क्षेत्र का लोकधर्म और देवोपासना डॉ. रजनी मीणा	38
5.	नाथपंथ का उदय, प्रभाव और अलवर के प्रमुख नाथ संत - श्रीमती रजनी यादव	50
6.	महान प्रतापी सम्राट महेन्द्रपाल प्रथम - एक मूल्यांकन - डॉ. देवाराम	64
7.	Democratic Political Tradition in Ancient India : A Retrospection Prof. Vibha Upadhayay	71
8.	An Analysis of the Leadership Styles of Rama and Ravana - Based on Valmiki Ramayana - Deepali Patwadkar	79
9	विचार - भारत में अल्पसंख्यकवाद - (प्रो.) डॉ. विजय वशिष्ठ	89
10	परिचर्चा - समान आचार संहिता : एक देश, एक कानून - प्रोफेसर विनय कपूर मेहरा	96
11	पुस्तक समीक्षा	103

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
IQAC-CELL
GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

हिन्दी दलित साहित्य में डॉ.जयप्रकाश कर्दम का योगदान

सोमदत्त , शोधार्थी , हिन्दी विभाग , राजऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय , अलवर (राज.) 301001

डॉ. देशराज वर्मा , सह आचार्य , हिन्दी विभाग , राजकीय महाविद्यालय , राजगढ़ , जिला अलवर , राजस्थान

शोध पत्र सारांश

डॉ. जयप्रकाश कर्दम हिन्दी दलित साहित्य के प्रबल रचयिता हैं। हिन्दी दलित साहित्य की पहली पीढ़ी की पहचान है। दलित वर्ग से ताल्लुक रखने के कारण उनका साहित्य अनुभव का साहित्य नहीं बल्कि आत्म-साक्षात्कार का साहित्य है। उनके साहित्य में दलित जीवन से जुड़े यथार्थवादी चित्रण मिलते हैं। उनका साहित्य दलित जीवन की संवेदनशीलता और अनुभवों की वास्तविकता है। डॉ. जयप्रकाश कर्दम का साहित्य दलितों के जीवन-संघर्ष और बेचैनी का जीता जागता दस्तावेज है। उनके साहित्य में दलित जीवन की विडम्बना, दु:ख, पीड़ा, व्यथा और कटुता दिखाई देती है। वे अपने साहित्य के माध्यम से समाज में नव निर्माण चाहते हैं। उनके साहित्य की मांग विश्वदृष्टि, जातिगत भेदभाव का त्याग, उच्च आदर्श भावना और आदर्श जीवन की रचना करना है। जो पूरी मानव जाति को सत्य के मार्ग पर ले जाना है। इस शोध पत्र में डॉ जयप्रकाश कर्दम का हिन्दी दलित साहित्य में योगदान का अध्ययन किया गया। है ।

परिचय :-

डॉ. जयप्रकाश कर्दम का जीवन बन रहा है बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय। उनका जन्म 05 जुलाई 1958 को उत्तर प्रदेश में गाजियाबाद के पास हापुड़ रोड पर स्थित इंद्रगढ़ी गांव में एक दलित परिवार में हुआ था, एक सामान्य परिवार में कर्दम जी का जन्म हुआ । व्यक्तित्व असामान्य रहा है। बचपन इंदरगढ़ी गांव में बीता। बचपन में उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी थी, लेकिन दादा की मृत्यु के बाद उनके घर की स्थिति बदल गई। उनके पिता टी.बी. रोगी होने के कारण वह खेत में काम नहीं कर पा रहा था। सो उनके सब खेत एक एक करके बिक गए। बाद में उनका पेट भरना मुश्किल हो गया। उन्हें बचपन में अभावों और संघर्षों का सामना करना पड़ा था। उनके पास किताबें और कॉपियां थीं, लेकिन स्कूल यूनिफॉर्म के अलावा और कोई कपड़े नहीं थे। 1976 में उनके पिता का देहांत हो गया। बड़े होने के कारण घर की सारी जिम्मेदारियां उन्हीं पर आ गईं। वह बिना स्कूल जाए दिन में काम करता था और रात के समय घर पर ही पढ़ाई करता था। उसने विज्ञान विषयों के साथ इंटरमीडिएट पास किया था, लेकिन कॉलेज की फीस भरने के लिए पैसे नहीं होने के कारण वह बी.एस. सी. प्रवेश

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
IQAC CELL
GOVT. College, Rajgarh (Alwar)

ISSN 2321-1288

Registered & Listed in UGC (Care List)

RAJASTHAN HISTORY CONGRESS

RAJHISCO

PROCEEDINGS VOLUME XXXV

Department of History & Culture, Manikyalal Verma Shramjeevi College, Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidhyapeeth, Deemed-to-be-University, Udaipur

Coordinator IQAC-CELL GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

SEPTEMBER - 2021

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

www.rajhisco.com

rajhisco@gmail.com

77. 19वीं–20वीं सदी के पश्चिमी राजस्थान में देशी शिक्षा पद्धति व उसके सामाजिक प्रभाव
–श्याम सुंदर ढेनुआं ... 694

78. राजस्थान के अभिलेखों में महिला संदर्भ
–वंदना अग्रवाल ... 703

79. भक्ति आंदोलन एवं राजस्थान की महिलाओं की साहित्यिक यात्रा
–मीना गौड़ ... 708

80. दिनेश नंदिनी डालमिया : बीसवीं शताब्दीय मारवाड़ी समाज और नारी चेतना
–अनीशा श्रीवस्तवा ... 714

81. जनजातीय महिलाएं : बदलता परिदृश्य
–विभा शर्मा ... 724

82. मेवाड़ के पारम्परिक लोक मनोरंजन
–ममता पूर्बिया ... 730

83. मेवाड़ के इतिहास मे क्षत्रिय कुमावतों का योगदान
–मदन मोहन टौंक ... 736

84. राजस्थान में बहुरूपिया कला : ऐतिहासिक एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य
–रजनी मीना ... 741

85. देलवाड़ा ठिकाने में अतिथि सत्कार परम्परा
–रेखा महात्मा ... 749

86. मीणा जनजाति के विवाह सम्बन्धी लोकगीत (करौली व सवाईमाधोपुर जिलों के विशेष सन्दर्भ में)
–निर्मला कुमारी मीणा ... 754

87. विगत में वर्णित मारवाड़ की कामगर जातियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन
–मरजीना बानो ... 761

88. मेवाड़ के कानोड़ ठिकाना में आखेट
–प्रियदर्शी ओझा ... 772

प्राचार्य
राजकीय ... महाविद्यालय
राजगढ़ (...)

Coordinator
IQAC-CELL
GCVT College, Rajgarh (...)

International Double Blind Peer Reviewed, Refereed & Indexed Research Journal Related to Higher Education For all Subject

Issue : SEPT. - 2021

Vol-I ; Issue-09

RESEARCH ANALYSIS AND EVALUATION

ISSN 0975-3486 (Print), E-ISSN- 2320-5482 RNI RAJBIL 2009/30097

IMPACT FACTOR 6.315 (SJIF)

www.ugcjournal.com

Dr. Krishan Bir Singh

Editor in Chief

Coordinator
IQAC CELL
Govt. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Editor's Office
A- 215, Moti Nagar,
Street No.7
Queens Road
Jaipur- 302021, Rajasthan,
India

Contact - 094 139 70 222
094 600 700 95

E-mail:
www.ugcjournal@gmail.com
dr.kbsingh@yahoo.Com
professor.kbsingh@gmail.Com

Coordinator
IQAC-CELL
Rajkiya College, Rajgarh (Alwar) Raj.

मुख्य सम्पादक – डॉ. कृष्णबीर सिंह का मानद पद एवं कार्य पूर्णतः अवैतनिक है।
इस शोध पत्रिका के प्रकाशन, सम्पादन एवं मुद्रण में पूर्णतः सावधानी बरती गई है। किसी भी प्रकार की त्रुटि महज मानवीय भूल मानी जाये। शोध पत्र की समस्त जिम्मेदारी शोधपत्र लेखक की होगी। त्रुटी हेतु सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक जिम्मेदार नहीं होगा।
समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर शहर ही होगा।

1. Editing of the research journal is processed without any remittance. **The selection and publication is done after recommendation of Peer Reviewed Team, Refereed and subject expert Team.**
2. Thoughts, language vision and example in published research paper are entirely of author of research paper. It is not necessary that both editor and editorial board are satisfied by the research paper. **The responsibility of the matter of research paper is entirely of author.**
3. Along with research paper it is compulsory to sent Membership form and copyright form. Both form can be downloaded from website i.e. **www.ugcjournal.com**
4. In any Condition if any National/International university denies to accept the research paper published in the journal then it is not the responsibility of Editor, Publisher and Manangement.
5. Before re-use of published research paper in any manner, it is compulsory to take written acceptance from Chief Editor unless it will be assumed as disobedience of copyright rules.
6. All the legal undertaking related to this research journal are subjected to be hearable at jaipur jurisdiction only.

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

International Level Double Blind Peer Reviewed, Refereed, Indexed Research Journal, ISSN(Print)-0975-3486, E-ISSN-2320-5482,RNI-RAJBIL-2009/30097, SEPTEMBER-2021,Vol-I, Issue-09

Research Paper -Economics

माही परियोजना : जनजातीय क्षेत्र की जीवन रेखा

रतिराम जाटव

सहायक आचार्य, अर्थशास्त्र राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़ (अलवर)

सामान्य सारांश

सिंचाई परियोजनाएँ किसी भी क्षेत्र के विकास में अग्रणी भूमिका निभाती हैं। ये परियोजनाएँ उस प्रदेश की जीवन–रेखा होती है, क्योंकि इनके माध्यम से उस क्षेत्र विशेष में फसल प्रारुप में परिवर्तन, पशुधन, मत्स्य पालन, पेयजल, सिंचाई इत्यादि की सुविधा उपलब्ध होती है। ऐतिहासिक काल का विस्तृत अध्ययन करने से पता चलता है कि अधिकांश मानव सभ्यताओं का उद्भव नदी घाटियों के किनारे ही हुआ है जिसे वर्तमान में देखा जा सकता है। अधिकांशतः जनसंख्या का फैलाव नदी बेसिन के इर्द–गिर्द पाया जाता है। माही नदी परियोजना एक बहुउद्देशीय नदी परियोजना है जो न केवल जल ही उपलब्ध करवाती है बल्कि यह जनजातीय क्षेत्र में वहाँ के स्थानीय निवासियों के लिए कृषि सुविधा, सिंचाई कार्य, जल विद्युत, मछलीपालन, इत्यादि में भी अभूतपूर्वयोगदान दे रही है। इस परियोजना के माध्यम से सुदूरपूर्व के क्षेत्रों में जल उपलब्ध करवाया जा रहा है। इस शोध–पत्र में माही परियोजना के द्वारा जनजातीय क्षेत्र में हो रहे लाभ का आकलन करने का प्रयास किया गया है। इस संबंध में शोध द्वारा बांसवाड़ा जिले की तीन तहसीलों का चयन कर प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ों के आधार पर अध्ययन किया गया है। प्रतिदर्श में बांसवाड़ा जिले की तीन तहसीलों के 180 परिवारों का यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से चयन कर प्रश्नावली के जरिए प्रत्यक्ष रूप से क्षेत्र में जाकर साक्षात्कार लेकर प्राथमिक आंकड़ों का संकलन किया है। इसी प्रकार द्वितीय आंकड़ों का संकलन कार्यालय, अधिशासी अभियंता माही डेम, बांसवाड़ा व जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, बांसवाड़ा से किया है।

मुख्य शब्दावली: माही परियोजना, जनजातीय क्षेत्र, सिंचाई, विद्युत गृह, दांयी मुख्य नहर, बायीं मुख्य नहर, हैक्टेयर, कमाण्ड क्षेत्र, वितरिका

प्रस्तावना

वागड़ और कांठल की गंगा अर्थात् माही नदी का उद्गम मध्य प्रदेश के धार जिले में विंध्याचल पर्वत से होता है। यह नदी राजस्थान में बांसवाड़ा जिले खादू ग्राम के निकट से प्रवेश करती है तथा राजस्थान में इस नदी का कुल बहाव क्षेत्र लगभग 171 किलोमीटर है। अनास, जाखम, सोम व इराऊ इसकी मुख्य सहायक नदियाँ हैं। राजस्थान से उत्तर दिशा से दक्षिण पश्चिम दिशा में घुमती हुई यह नदी गुजरात राज्य में प्रवेश करती है तथा अन्त में खम्भात की खाड़ी से होते हुए अरब सागर में जाकर विलीन हो जाती है। 1960 तक इस नदी के जल का कोई उपयोग नहीं हो पाता था। 1959–60 में राजस्थान के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र बांसवाड़ा व डूंगरपुर में जनजातीय क्षेत्र व वहाँ की स्थानीय जनता के विकास हेतु नदी पर बहुउद्देशीय परियोजना का कार्य आरंभ करने का विचार किया गया। राजस्थान व गुजरात राज्य एक सामूहिक बहुउद्देशीय परियोजना के संदर्भ में 1966 में एक समझौता किया गया तथा इस समझौते के तहत् बांसवाड़ा जिले के बोरखेड़ा गांव में माही सागर बांध का व गुजरात के कड़ाना बांध का निर्माण कार्य प्रस्तावित किया। 1971 में योजना आयोग द्वारा स्वीकृति मिलने के पश्चात् इसका निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया। माही बजाज सागर बांध की लागत राजस्थान व गुजरात के द्वारा 45 : 55 के अनुपात में सामूहिक तथा कड़ाना बांध की सम्पूर्ण लागत गुजरात राज्य के द्वारा वहन की गई। 1966 में हुए समझौते के द्वारा माही बजाज सागर बांध के जल का उपभोग राजस्थान व गुजरात दोनों व कड़ाना बांध के जल का उपयोग गुजरात राज्य ही करेगा जब तक कि नर्मदा परियोजना का कार्य पूर्ण नहीं हो जाता। इस प्रकार माही बजाज सागर बांध परियोजना से राजस्थान के बांसवाड़ा व डूंगरपुर जिलों को सिंचाई व पेयजल की उपलब्धता हुई।

Coordinator
IQAC-CELL
Govt. College Rajgarh (Alwar) Raj.

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

IJARASEM

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 5, September 2021 |

राजनीतिक प्रेरणा एवं महिला जागृति

Dr. Prakash Chand Meena

Associate Professor of Political Science, Govt. College, Rajgarh, Alwar, Rajasthan, India

सार

राजनीति में तभी सुधार आएगा, जब नागरिक राजनीतिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भूमिका निभाएं। पत्रिका जनप्रहरी अभियान का ध्येय नागरिकों की भागीदारी से नेतृत्व का निर्माण करना है। इसी अभियान के तहत जनसंवाद कार्यक्रम में समाजसेवी महिलाओं ने शिरकत की। महिलाओं ने वर्तमान राजनीति, महिलाओं की भूमिका और उसमें सुधार को लेकर बेबाकी से अपनी राय रखी। उन्होंने कहा कि देश के विकास और सशक्त सरकार बनाने में महिलाओं की अहम भूमिका है। राजनीति में अभी महिलाओं का उतना प्रतिशत नही. आज महिलाएं आत्मनिर्भर हो रही हैं। समाज के साथ देश में अच्छी सरकार बनाने के लिए वे क्या सही है, क्या गलत इसका आकंलन कर सकती हैं। अत्मनिर्भर भारत में महिलाओं की भूमिका उल्लेखनीय है। हमें चुनाव में अपना मत अवश्य देना चाहिए। इसके अलावा हर महिला को मतदान के प्रेरित करना चाहिए। मतदान हमारा अधिकार है। लोकतांत्रिक देश में सभी को यह अधिकार मिला है। हमारा एक वोट देश को अच्छी सरकार देगा। राजनीति में पढ़ी लिखी महिलाओं को आगे आना चाहिए। मतदाता जगरूक होगा तो ही सरकार में हमारा प्रतिनिधित्व करने वाले का सही चयन होगा। मतदान करो और दूसरों को प्रेरित करो। हम मतदान करेंगे और दूसरों को मतदान कराने के लिए प्रयास करेंगे। महिलाओं को उनके कानूनी अधिकारों, प्रावधानों के प्रति जागृत करना, विभिन्न सामाजिक कुप्रथाओं के विरूद्ध महिलाओं को जागृत व संगठित करना तथा विभिन्न योजनाओं की जानकारी देकर उन्हें योजनाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित करना।

परिचय

माता के रूप में, देवी के रूप में विधाता की संरचना है- मातृशक्ति, महिमाशक्ति। यह उसका परमपूज्य दैवी रूप है। देवत्व के प्रतीकों में सर्वप्रथम स्थान नारी का और दूसरा नर का है। भाव-संवेदना धर्म-धारणा और सेवा-साधना के रूप में उसी की वरिष्ठता को चरितार्थ होते देखा जाता है।[1,2,3]

महिला शक्ति ने पिछले दिनों अनेकानेक त्रास देखे हैं। सामंतवादी अंधकार युग से उपजे अनर्थ ने सब कुछ उलट-पुलट दिया है। उसे अबला समझा गया और कामिनी, रमणी, भोग्या व दासी जैसी स्थिति में रहने को विवश होना पड़ा। जो भाव पूज्य रहना चाहिए था, वही कुदृष्टि के रूप में बदल गया, किन्तु अब परिवर्तन का तूफानी प्रवाह इस आधी जनशक्ति को उबारने हेतु गति पकड़ चुका है। पश्चिम के नारी-मुक्ति आंदोलन (विमन लिब) से अलग यह महिला शक्ति के जागरण की प्रक्रिया दैवी चेतना द्वारा संचालित है, पर बुद्धि की आकांक्षा के अनुरूप ही चल रही है। महापरिवर्तन की बेला में जब सतयुग की वापसी की चर्चा हो रही है, तो गायत्री परिवार ही नहीं, सारे विश्व में इस आधी जनशक्ति के उठ खड़े होने एवं विश्व रंगमंच के हर दृश्य-पटल पर अपनी महती भूमिका निभाते देखा जा सकेगा। शिक्षा एवं स्वावलंबन रूपी विविध कार्यक्रम के माध्यम से महिला-जागरण की, उसके पौरोहित्य से लेकर युग नेतृत्व सँभालने तक की, जो संभावनाएँ व्यक्त की जा रही हैं, मिथ्या नहीं हैं।

जीवसृष्टि की संरचना जिस आदिशक्ति महामाया द्वारा संपन्न होती है, उसे विधाता भी कहते हैं और माता भी। मातृशक्ति ने यदि प्राणियों पर अनुकंपा न बरसाई होती, तो उसका अस्तित्व ही प्रकाश में न आता। भ्रूण की आरंभिक स्थिति एक सूक्ष्म बिंदु मात्र होती है। माता की चेतना और काया उसमें प्रवेश करके परिपक्व बनने की स्थिति तक पहुँचाती है। प्रसव-वेदना सहकर वही उसके बंधन खोलती और विश्व-उद्यान में प्रवेश कर सकने की स्थिति उत्पन्न करती है। असमर्थ-अविकसित स्थिति में माता ही एक अवलंबन होती है, जो स्तनपान कराती और पग-पग पर उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। यदि नारी के रूप में माता समय-समय पर चित्र-विचित्र प्रकार के अनुग्रह न बरसाती तो मनुष्य ही नहीं, किसी भी जीवधारी की सत्ता इस विश्व-ब्रह्माण्ड में कहीं भी दृष्टिगोचर न होती, इसलिए उसी का जीवनदायिनी ब्रह्मचेतना के रूप में अभिनंदन होता है। वेदमाता, देवमाता व विश्वमाता के रूप में जिस त्रिपदा की पूजा-अर्चना की जाती है, प्रत्यक्षत: उसे नारी ही कहा जा सकता है।[5,7,8]

मनुष्य के अतिरिक्त प्रतिभावान प्राणियों में देव-दानवों की गणना होती है। कथा है कि वे दोनों ही दिति और अदिति से उत्पन्न हुए। सृजनशक्ति के रूप में इस संसार में जो कुछ भी सशक्त, संपन्न, विज्ञ और सुंदर है, उसकी उत्पत्ति में नारीतत्त्व की ही अहं भूमिका है, इसलिए उसकी विशिष्टता को अनेकानेक रूपों में शत-शत नमन किया जाता है। सरस्वती, लक्ष्मी और काली के रूप में विज्ञान का, गायत्री-सावित्री के रूप में ज्ञानचेतना के अनेकानेक पक्षों का विवेचन होता है।

Coordinator
IQAC CELL
GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Raj.
Rajgarh (Alwar) Raj.

देवत्व के प्रतीकों में प्रथम स्थान नारी का और दूसरा नर का है। लक्ष्मी-नारायण उमा-महेश शची-पुरंदर सीता-राम राधे-श्याम जैसे देव-युग्मों में प्रथम नारी का और पश्चात नर का उल्लेख होता है। माता का कलेवर और संस्कार बालक बनकर इस संसार में प्रवेश

ISSN 2231-2552

अधिकार

(विधि, मानवाधिकार, साहित्य, समाज एवं विज्ञान को समर्पित मासिक अन्तर्राष्ट्रीय [illegible])

ADHIKAR

An International Refereed & Reer-Reviewed Re[illegible]
Journal Related to Higher Education for all Su[illegible]

Year - 11, Volume - 11
November, 2021
SLRF Impact Factor : 2.360

Adhikar

प्रधान संपादक
डॉ मुकेश कुमार मालवीय

समन्वयक
Coordinator
IQAC-CELL
Govt. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

प्राचार्य
राजकीय [illegible] महाविद्यालय
[illegible] (अलवर) राज.

Rules & Guidelines

If the teachers or Research Scholar intending to publish their articles/research papers in the every issue of Adhikar are required to submit their manuscript to the author or by e-mail. The dead line for the submission of article/research paper for the every issue would be date of 25th every month. Articles/research papers accepted only when the author fulfilled the following rules and is finally recommended by the Editorial Board of the Adhikar.

* Article/Research paper in the format must be within 1500-3000 words or 5-10 pages including references and should be Computer typed on A-4 paper (white) in 1.5 line space, only on one side of the paper with a margin on the left side at least 1 ½ inches wide and may not be submitted elsewhere.
* There should be at least one inch space on the top and bottom of the page. The type's manuscript should be clean with headings and sub-headings clearly marked out.
* Reference should not be given in support of well-known facts.
* The title of an article should be written in capitals. Below to it in right side author name should be written and initials with first letters in capital and other letters in small.
* The researcher whose article/research paper contains slide/picture/image should insure that they send it properly via e-mail: **adhikara2z@gmail.com**
* **For manuscript in Hindi**- Krutidev 10 Font, Title 16 point black, Author's Name 13 point Italic black, text-13 point, folio-12 point and only references are allowed and footnote shall not be used.
* **For manuscript in English**- Times New Roman Font, Title 16 point, Author name 11 point Italic black, Text 12 point, Folio 10 and only references are allowed and footnote shall not be used.

Membership/Publication

Rs. 3000/- (One Article)

All correspondence relating to circulations and call may be addressed to:

Editor in Chief

Dr. MUKESH KUMAR MALVIYA

ASST. PROFESSOR

Law School,

Banaras Hindu University,

Varanasi, (U.P.) India-221005

Cell: +91-8004851126

E-mail: adhikara2z@gmail.com

© Publisher

* All views and opinions expressed in Adhikar are the sole responsibility of the author concerned. Neither the Editor nor Publisher can in anyway, be held responsible for them.

Coordinator IQAC-CELL

अधिकार

ISSN 2231-2552

(विधि, मानवाधिकार, साहित्य, समाज एवं विज्ञान को समर्पित मासिक अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका)

ADHIKAR

An International Refereed & Peer-Reviewed Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

Year-11, Volume-11
November, 2021
SLRF Impact Factor : 2.360

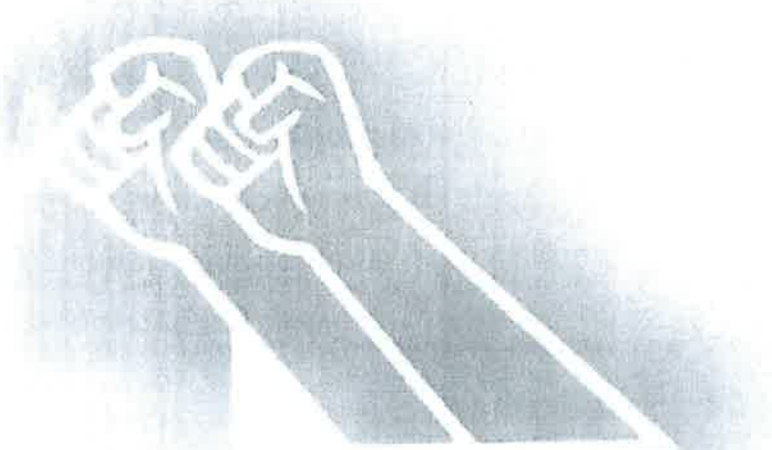

Adhikar

प्रधान संपादक
डॉ. मुकेश कुमार मालवीय

Principal
Govt. P. G. College
Rajgarh (Alwar) Raj.

Coordinator
IQ AC-CELL
College, Rajgarh (Alwar) Raj.

CamScanner

SLRF Impact Factor: 2.360, ISSN 2231-2552

अधिकार

Year 11, Vol. 11, November 2021

(विधि, मानवाधिकार, साहित्य, समाज एवं विज्ञान को समर्पित मासिक अंतर्राष्ट्रीय शोध–पत्रिका)

ADHIKAR

An International Refereed and Peer-Reviewed Research Journal Related to Higher Education for all Subject

प्रधान संपादक

डॉ. मुकेश कुमार मालवीय

(सहायक प्राध्यापक)

विधि–संकाय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ0प्र0)

संपर्क – 08004851126

संपादक एवं समन्वयक

ओमकार प्रसाद मालवीय

राकेश कुमार मालवीय

कार्यकारी संपादक

डॉ. रजनीश कुमार पटेल

एसोशिएट प्राध्यापक विधि–संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,वाराणसी

संपादकीय

ओमकार प्रसाद मालवीय

(संपादक एवं समन्वयक)

अधिकार शोध–पत्रिका

मुकाम पोस्ट–चाँद, तहसील–चौरई

जिला–छिन्दवाड़ा (म.प्र0) 480110

संरक्षक

प्रो. (डॉ.) निशा दुबे

पूर्व कुलपति, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रो. बी. सी. निर्मल

कुलपति, एन.यू.एस.आर.आई.,रांची

संपादक मण्डल

प्रो. तिकाशा शोबा

मानवाधिकार संगठन, काठमांडू नेपाल

प्रो. सरोज बिल्लोरे

राजनीति–विज्ञान विभाग, ओल्ड जी.डी.सी., इंदौर

डॉ. लोयला टॉय

स्पेस साइन्स, जर्मनी

डॉ. मोना पुरोहित (विभागाध्यक्ष)

विधि–विभाग, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

डॉ. जे.के. जैन (पूर्व प्राचार्य)

शासकीय नवीन विधि महाविद्यालय, इंदौर

डॉ. अजेन्द्र श्रीवास्तव (प्राध्यापक)

विधि–संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ. एस. के. तिवारी

एकेडेमिक स्टॉफ कॉलेज, बी.एच.यू. वाराणसी

डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव

हिन्दी डॉ.शकुन्तला मिश्रा पुनर्वास विवि.,लखनऊ

Coordinator
IQAC-CELL
GOVT. College Rajgarh (Alwar) Raj.

शर्तें –1. शोध–पत्रिका में समस्त पद अवैतनिक हैं। सभी रचनाओं एवं शोधों में विचार लेखकों के हैं। अतः उनके विचार से संपादक मंडल या शोध–पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। इस शोध–पत्रिका के प्रकाशन, संपादन एवं मुद्रण में पूर्णतः सावधानी बरती गई है। किसी भी प्रकार की त्रुटि महज मानवीय भूल मानी जाये। त्रुटि हेतु संपादक, मुद्रक जिम्मेदार नहीं होंगे। किसी भी विवाद का क्षेत्राधिकार न्यायालय, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) होगा।

2. स्वत्वाधिकारी – मुद्रण, प्रकाशन, संपादक द्वारा चाँद, जिला–छिन्दवाड़ा से प्रकाशित एवं सूर्या बुक एण्ड फार्म कम्प्यूटर सेन्टर, लका, बी.एच.यू., वाराणसी से मुद्रित।

Principal
Govt. R.G. College
Rajgarh (Alwar) Raj.

CamScanner

CONTENTS

1.	Assessment of Climate Variability in Semi-Arid Regions of Eastern Plain in Rajasthan * Ravikant Meena	1–7
2.	The Predicament of Women * Dr. Priya Jain	8–11
3.	रामचन्द्र शाण्डिल्य कृत चचवंशमहाकाव्यम् : सांस्कृतिक समीक्षा *डॉ. सुमेर सिंह बैरवा	12–15
4.	वेद–कालीन आजीविका के संसाधन *योगेन्द्र सिंह	16–19
5.	स्वामी विवेकानन्द : दार्शनिक विचार एवं प्रभाव *महेंद्र सिंह	20–24
6.	शमशेर बहादुर की कविता का परवर्ती काव्य पर प्रभाव *कपिल देव कुण्डारा	25–31
7.	राजस्थान में वस्त्र एवं आभूषण की मूर्तिकला परम्परा *कविता वर्मा	32–37
8.	समाज में वैवाहिक जीवन साथी सम्बन्धी बदलती वरीयताएँ *संजय बमणावत	38–43
9.	ग्रामीण विकास में मनरेगा का योगदान : राजस्थान के विशेष संदर्भ में *शिव शर्मा	44–48
10.	राजस्थान में शहरीकरण : एक समीक्षात्मक अध्ययन *चिरंजी लाल रैगर	49–54
11.	गुरुत्वाकर्षण तरंग की खोज : लीगो (LIGO) की सफलता *गजेन्द्र कुमार महावर	55–58
12.	इंदिरा गांधी नहर परियोजना का दुग्ध उत्पादन पर प्रभाव *डॉ. रामकुमार देवांगन	59–64
13.	शंघाई सहयोग संगठन में चीन, रूस व भारत की भूमिका *डॉ. संदीप सिंह चौहान **महेन्द्र सिंह	65–71
14.	श्रीलंका में भारतीय निवेश : ऊभरती चुनौतियॉ *डॉ. आशा परमार **मानसिंह अवाना	72–77
15.	दलितों में मानवाधिकार विकास हेतु सरकारी एव गैर सरकारी संगठनों का प्रयास : राजस्थान के संदर्भ मे *डॉ. उमा बाडोलिया **सुभाष चद्र कुम्हार	78–83
16.	श्रीकृष्णसंकीर्तन : कलियुग के दोषो से बचने का उपाय *डॉ. रामदत्त पाराशर	84–88
17.	नालन्दा और तक्षशिला विश्वविद्यालय की शिक्षा व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन *डॉ. अजय सिंह आर्य **संजीव कुमार	89–92

Principal
Govt. R.G. College
Rajgarh (Alwar) Raj.

Coordinator
IQAC-CELL
Govt. ...
Rajgarh (Alwar) Raj.

CS CamScanner

रामचन्द्र शाण्डिल्य कृत चचवंशमहाकाव्यम् : सांस्कृतिक समीक्षा

*डॉ. सुमेर सिंह बैरवा
सहायक आचार्य–संस्कृत,
राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़ (अलवर)

आचार्य रामचन्द्र शाण्डिल्य ने चचवंशमहाकाव्यम् रुचिपूर्ण काव्य शैली के द्वारा अविभाजित भारत के सिन्ध प्रान्त के राजाओं विशेषकर चचवंश के महाराजा (सिंधुपति) चच एवं दाहरसेन के इतिहास को प्रस्तुत किया है। संस्कृति के इस अभिप्राय के चिन्तन से यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारी संस्कृति में कुछ ऐसे अमर तत्त्व हैं जिनके कारण यह आज भी जीवित है। और वे तत्त्व हैं-

आध्यात्म भावना – भारतीय संस्कृति की सबसे प्रखर विशेषता है आध्यात्म भावना। भारतीय जन संसार से परे किसी सूक्ष्म अलौकिक सत्ता में विश्वास रखते हैं। इस आध्यात्म भावना के कारण ही भारतीय जन समुदाय घोर से घोर सांसारिक कष्टों को सहर्ष झेल लेता है।

समन्वय की भावना – भारतीय विचारकों ने सभी धर्मों, मतों, सम्प्रदायों और समाजों को एक माना। यहाँ हिन्दू मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध, जैन, सनातनी, शैव, वैष्णव, शाक्त, आर्य या रजनीशी सभी को बराबर का सम्मान मिला है।

पुरुषार्थ की प्राप्ति – भारतीय संस्कृति ने मानव को लक्ष्य के रूप में चतुवर्ग का दुर्लभ विचार प्रदान किया। इसके अनुसार मनुष्य को धर्म के अनुसार अर्थ और काम की प्राप्ति करनी चाहिए तभी मोक्ष का द्वार खुल सकता है।

त्याग व भोग का सन्तुलन – भारतीय संस्कृति त्याग और भोग का समन्वय करना सिखाती है। यहाँ के ऋषि की कामना है।

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'-गीता- जीवन का मूल मंत्र 'कर्म ही पूजा' है। श्रीकृष्ण से लेकर कबीर तक, रैदास से लेकर खलीफा तक, टॉलस्टॉय से लेकर शिवाजी तक सभीने श्रम के महत्त्व को समझाया और दर्शाया।

'ब्रह्मचर्येण तपसा देव मृत्युमुपोध्नत' - अर्थात् ब्रह्मचर्य से मृत्यु पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है।

मातृ देवो भव, पितृ देवे भव, आचार्य देवो भव, यह वेद वाणी है।

'सा विद्या या विमुक्तये' विधा वही हे जो हमें इस दुनिया की चिन्ता से मुक्त करे।

अतिथि देवा भवः।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

तपोमय जीवन।

साहित्य और समाज अन्योन्याश्रित हैं। साहित्य और समाज दोनों का ही स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। जहाँ साहित्य चर्चा होगी, वहाँ समाज चर्चा अवश्य होगी और समाज के होने पर ही साहित्य सृजन होगा। यह उक्ति उचित ही प्रतीत होती है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। जैसे दर्पण में मनुष्य के पूर्व अवयवों का अवलोकन होता है, उसी प्रकार साहित्य रूपी दर्पण में समाज की स्थिति रूपी अवयवों का प्रतिबिम्बिकरण होता है।[1]

बाबू गुलाब राय ने साहित्य एवं समाज के अन्योन्याश्रित संबंध की विवेचना करते हुए कहा है कि कवि और लेखक किसी अंश में समाज के प्रतिनिधि होते हैं और विचार प्रदान करते हैं। समाज कवि और लेखकों को बनाता है और लेखक तथा कवि समाज को बनाते हैं। दोनों में आदान-प्रदान तथा क्रिया-प्रतिक्रिया भाव चलता रहता है। यही सामाजिक उन्नति का नियामक सूत्र बताता है।[2]

इस प्रकार स्पष्ट है कि अच्छा साहित्य अपने युग का प्रतिनिधि होता है। यह अपने साहित्य में समाज का सत्य एवं सजीव चित्र अंकित करता है। यदि वह समाज की परिस्थितियों से अपने साहित्य को वंचित रखता है तो वह साहित्यकार कहलाने का अधिकारी नहीं होता है। जो साहित्यकार समाज का यथार्थ चित्र करता है वही सच्चे अर्थों में साहित्यकार है।

साहित्यकार समाज का मस्तिष्क भी होता है और मुख भी। उसकी आवाज समाज की आवाज होती है। एक ओर वह समाज के विचारों भावों को आभास करके अभिव्यक्ति प्रदान करता है दूसरी ओर वह अपने कौशल से अपना सन्देश समाज को ध्वनित करता है। हम साहित्यकार के माध्यम से समाज के हृदय तक पहुँच सकते हैं। इसलिए यह उक्ति समीचीन ही दिखाई देती है कि ''जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि।''

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
IQAC
Govt. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

ADHIKAR

ISSN 2231-2552

अधिकार

(विधि, मानवाधिकार, साहित्य, समाज एवं विज्ञान को समर्पित मासिक अन्तर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका)

ADHIKAR

An International Refereed & Reer-Reviewed Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

Year - 11, Volume - 11
November, 2021
SLRF Impact Factor : 2.360

चिरंजी लाल रैगर

Adhikar

प्रधान संपादक
डॉ मुकेश कुमार मालवीय

राजकीय ... महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
IQAC-CELL
Govt. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

Rules & Guidelines

If the teachers or Research Scholar intending to publish their articles/research papers in the every issue of Adhikar are required to submit their manuscript to the author or by e-mail. The dead line for the submission of article/research paper for the every issue would be date of 25th every month. Articles/research papers accepted only when the author fulfilled the following rules and is finally recommended by the Editorial Board of the Adhikar.

* Article/Research paper in the format must be within 1500-3000 words or 5-10 pages including references and should be Computer typed on A-4 paper (white) in 1.5 line space, only on one side of the paper with a margin on the left side at least 1 ½ inches wide and may not be submitted elsewhere.
* There should be at least one inch space on the top and bottom of the page. The type's manuscript should be clean with headings and sub-headings clearly marked out.
* Reference should not be given in support of well-known facts.
* The title of an article should be written in capitals. Below to it in right side author name should be written and initials with first letters in capital and other letters in small.
* The researcher whose article/research paper contains slide/picture/image should insure that they send it properly via **e-mail**: **adhikara2z@gmail.com**
* **For manuscript in Hindi-** Krutidev 10 Font, Title 16 point black, Author's Name 13 point Italic black, text-13 point, folio-12 point and only references are allowed and footnote shall not be used.
* **For manuscript in English-** Times New Roman Font, Title 16 point, Author name 11 point Italic black, Text 12 point, Folio 10 and only references are allowed and footnote shall not be used.

Membership/Publication

Rs. 3000/- (One Article)

All correspondence relating to circulations and call may be addressed to:
Editor in Chief
Dr. MUKESH KUMAR MALVIYA
ASST. PROFESSOR
Law School,
Banaras Hindu University,
Varanasi, (U.P.) India-221005
Cell: +91-8004851126
E-mail: adhikara2z@gmail.com

© Publisher

* All views and opinions expressed in Adhikar are the sole responsibility of the author concerned. Neither the Editor nor Publisher can in anyway, be held responsible for them.

Created by Universal Document Converter

राजस्थान में शहरीकरण : एक समीक्षात्मक अध्ययन

***चिरंजी लाल रैगर**
सहायक आचार्य – भूगोल,
राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़ (अलवर)

शहरीकरण का तात्पर्य जनसंख्या का ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर स्थानान्तरण, ''शहरी क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों के अनुपात में क्रमिक वृद्धि'' तथा प्रत्येक समाज के द्वारा इस तरह के बदलाव को स्वीकार करने से है। शहरी क्षेत्र उच्च मूल्य वाले क्षेत्रों, जैसे सेवाओं और उद्योगों के लिए अधिक उपयुक्त हैं, जो निवासियों की उच्च आय और क्रय शक्ति, कौशल समूह की उपलब्धता और अन्य बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

संयुक्त राष्ट्र सतत विकास रिपोर्ट, 2019 के अनुसार वर्ष 2007 से विश्व की आधी से अधिक आबादी शहरों में निवास कर रही है और इसकी हिस्सेदारी वर्ष 2030 तक 60 प्रतिशत तक होने का अनुमान है। शहरीकरण आर्थिक विकास का इंजन है और यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि शहरों और महानगरीय क्षेत्रों का वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (संयुक्त राष्ट्र सतत विकास रिपोर्ट, 2019) में लगभग 60 प्रतिशत योगदान है। शहरी बस्तियां विकास की धुरी के रूप में कार्य करती हैं, जहां सरकार द्वारा वाणिज्य और परिवहन की परस्पर क्रिया से ज्ञान और सूचनाओं को साझा करने, नवाचार, उद्यमशीलता और विकास को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक बुनियादी ढॉचा प्रदान किया जाता है। शेष विश्व की तरह भारत में भी शहरीकरण तेजी से बढ़ रहा है।[1]

शहरीकरण की प्रवृत्ति राजस्थान में भी राष्ट्रीय स्तर के समान बढ़ रही है। भारत की कुल जनसंख्या में शहरी जनसंख्या की हिस्सेदारी वर्ष 1961 में 17.97 से बढ़कर वर्ष 2001 में 27.81 प्रतिशत हो गयी और वर्ष 2011 में यह बढ़कर 31.14 प्रतिशत हो गयी। इसी तरह राजस्थान की कुल जनसंख्या में शहरी जनसंख्या की हिस्सेदारी में वृद्धि की प्रवृति देखी जा सकती हैं, जो वर्ष 1961 में 16.28 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2001 में 23.39 प्रतिशत तथा वर्ष 2011 में 24.87 प्रतिशत हो गई, जैसा कि चित्र– 1 में दर्शाया गया है। चित्र–2 और चित्र–3 के द्वारा राजस्थान की कुल जनसंख्या, शहरी जनसंख्या और इनसे संबंधित पुरुष और महिला जनसंख्या के आकार को बताया गया है। वर्ष 2011 में, राजस्थान के शहरी क्षेत्रों में रहने वाली कुल जनसंख्या 1.70 करोड़ थी, जिसमें पुरुष जनसंख्या 89.09 लाख और महिला जनसंख्या 81.39 लाख थी। वर्ष 2001 में राजस्थान में कुल शहरी जनसंख्या 1.32 करोड़ थी, जिसमें 69.93 लाख पुरुष और 62.21 लाख महिलाएं थी। वर्ष 2011 में राजस्थान की शहरी जनसंख्या में पुरुष जनसंख्या की हिस्सेदारी 52.26 प्रतिशत और महिला जनसंख्या की हिस्सेदारी 47.74 प्रतिशत थी, जबकि वर्ष 2001 में राज्य की कुल शहरी जनसंख्या में पुरुषों और महिलाओं की हिस्सेदारी क्रमशः 52.92 प्रतिशत और 47.08 प्रतिशत थी।[2]

चित्र–1

प्राचार्य
Coordinator
Created by Universal Document Converter

Indian Journal of Natural Sciences *www.tnsroindia.org.in ©IJONS*

Vol.12 / Issue 69 / December / 2021 *International Bimonthly (Print)* *ISSN: 0976 – 0997*

RESEARCH ARTICLE

Evaluation of Antibacterial and Antifungal Activity of Methanolic Extracts of Stem-Bark of the Selected Plants

Rahul Kumar Jonwal[1]*, Rekha Vijayvergia[2], Rashmi Kundra[3] and Chitra Jain[4]

[1]Lab. No. 11, Department of Botany, University of Rajasthan, Jaipur, India.
[2]Head, Department of Botany, University of Rajasthan, Jaipur, India.
[3]Assistant Professor, Govt. P. G. College, Rajgarh (Alwar), Rajasthan, India.
[4]PDF Fellow, Lab. No. 11, Department of Botany, University of Rajasthan, Jaipur, India.

Received: 04 Oct 2021 Revised: 17 Oct 2021 Accepted: 28 Oct 2021

***Address for Correspondence**
Rahul Kumar Jonwal
Lab. No. 11,
Department of Botany,
University of Rajasthan, Jaipur, India.
Email: rameshjony89@gmail.com

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the **Creative Commons Attribution License** (CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

ABSTRACT

Plants have been used as rich sources of natural therapeutic agents to cure various illnesses. Due to increasing resistance to traditional antibiotic drugs, demand for discovery of safer antimicrobial agents has been increased. Due to presence of different phytochemicals, plant extracts show antimicrobial activity. In the present investigation, methanolic extracts of stem-bark of the selected trees (*Holoptelia integrifolia, Pscidium guajava, Pongamia pinnata, Syzygium cumini, and Bombax cieba*) were evaluated for their antibacterial (*E. coli*, and *S. aureus*), and antifungal (*A. niger*, and *P. chrysogenum*) at different concentrations (30 mg/L, 60 mg/L, 90 mg/L) along with standard antibiotic drug as positive control by well diffusion method. Results showed the presence of good antimicrobial activity of all the extracts. For *E. coli*, maximum MIC was observed by extract of *P. pinnata* (75-80 mg/L) and *B. cieba* with the lowest MIC values (15-20 mg/L) while *P. guajava* and *P. pinnata* extracts were found to have more potential against *S. aureus* (MIC- 15-20 mg/L). Extract of *H. integrifolia*, *S. cumini*, and *B. cieba* were equally effective against *A. niger* (MIC 15-20 mg/L) while the lowest MIC value against *P. chrysogenum* was shown by extract of *H. integrifolia*. Results of the present study concluded that the stem-bark of selected trees have active compounds which are responsible for their antimicrobial activity. Further, identification, and isolation of those active compounds may pave path for pharmaceutical industries to formulate new antimicrobial drugs.

Keywords: antibacterial, antifungal, phytochemicals, stem bark, MIC etc.

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
IQAC CELL
Govt. College Rajgarh (Alwar) Raj.

International Journals of Multidisciplinary Research Academy

USA Address: 5913 Warren Ridge Dr, Bakersfield, California, USA - 93313
India Address: 129, NEW GRAIN MARKET, JAGADHRI – 135003
www.ijmra.us email id:- editorijmie@gmail.com, inforijmra@gmail.com

ICV 9.00 for IJMIE and IJMT, ICV 6.19 for IJPSS, ICV 9.00 for IJRSS and ICV 6.96 for IJESM as per IC Journals Master List

Publication Certificate

Hereby awarding this certificate to डॉ अरुण कुमार in recognition of the publication of the Research Paper / Case Study / Article "भारतीय संविधान में नागरिकों के मूलभूत अधिकारों का अध्ययन" Published in International Journal of Research in Social Sciences Vol. 11 Issue 5, May 2021, ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal No 48887.An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.

THANK YOU

WITH REGARDS

Editor
www.ijmra.us
editorijmie@gmail.com
info@ijmra.us

Principal
Govt. P. G. College
Rajgarh (Alwar) Raj.

Coordinator
IQ AC-CELL
GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

Open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journals

listed in Ulrich's Periodical Directory, USA; Open J-Gate, Index Copernicus, Cabell's Directories of Publishing Opportunities, USA, New Jour, EBSCO Publishing, Scribd, Cornell University Library, DOAJ, CEPIC and Scirus.

International Journal of Management, IT & Engineering (IJMIE) (ISSN: 2249-0558)
International Journal of Engineering, Science and Mathematics (ISSN: 2320-0294)
International Journal of Marketing and Technology (IJMT) (ISSN: 2249-1058)
International Journal of Research in Social Sciences (IJRSS) (ISSN: 2249-2496)
International Journal of Engineering & Scientific Research (ISSN: 2347-6532)
International Journal of Physical and Social Sciences (ISSN: 2249-5894)

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 5, May 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारतीय संविधान में नागरिकों के मूलभूत अधिकारों का अध्ययन

डॉ अरुण कुमार
सह आचार्य राजनीति विज्ञान
राजकीय महाविद्यालय,राजगढ़(अलवर)

सारांश

इस शोध पत्र में भारतीय संविधान के अंतर्गत नागरिकों को प्रदत्त मौलिक अधिकारों के बारे में बताया गया है। मौलिक अधिकार सबसे बुनियादी अधिकार हैं जो मानवीय गरिमा को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं। यह अधिकार प्राकृतिक कानून के सिद्धांत की पुष्टि करता है कि नागरिकों को अधिकार का एक सेट प्रदान करके यह साबित करता हैं की कोई भी कानून से ऊपर नहीं है। मौलिक अधिकारों को संविधान के अध्याय के तहत कवर किया गया है और मोटे तौर पर समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14-18), स्वतंत्रता का अधिकार (अनुच्छेद 19-22), शोषण के खिलाफ अधिकार (अनुच्छेद 23-24), अधिकार जैसे अधिकार शामिल हैं। धर्म की स्वतंत्रता (अनुच्छेद 25-28), संस्कृति और शिक्षा का अधिकार (अनुच्छेद 29-30) और संवैधानिक उपायों का अधिकार (अनुच्छेद 32-35)। मौलिक अधिकार संविधान की आधारशिला रहे हैं और बहुत सारे अधिनिर्णय के अधीन रहे हैं।

मुख्य शब्द

संविधान, गरिमा, मौलिक, अधिकार, मानव, कानून, अधिकार

परिचय

मौलिक अधिकारों के बहुत सारे नाम हैं। उन्हें प्राकृतिक मानवाधिकार या बुनियादी और अविच्छेद्य अधिकार कहा जा सकता है। प्राकृतिक कानून जिस रूप में आज हमारे सामने खड़ा है, वही मौलिक अधिकारों का उदगम स्थल है। इस तरह के प्राकृतिक कानून का सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि कुछ ऐसे कानून हैं जिन्हें हटाया नहीं जा सकता है, किसी भी परिस्थिति में लोगों को उनसे वंचित नहीं किया जा सकता है।

प्राकृतिक कानून कहता है कि राज्य में एक प्राकृतिक व्यवस्था मौजूद है क्योंकि इस तथ्य के कारण कि सभी चीजें भगवान या प्रकृति द्वारा जीवन में लाई गई हैं। सब कुछ अपनी विशेषताओं से बना है और प्रकृति के कुछ नियमों और कानूनों के अधीन होना चाहिए। इस सिद्धांत के अनुसार, कुछ ऐसा जो मानव गुणों से समझौता करता है या उन्हें अपनी पूर्ण क्षमता तक पहुंचने से रोकता है, वह प्रकृति के नियम का उल्लंघन है। इसकी सीमाओं के भीतर और इसके नियमों के अनुसार प्राकृतिक कानून किसी भी अन्य मानव निर्मित कानून से अधिक है।

सिसरो, रोमन दार्शनिक का मानना था कि प्राकृतिक कानून कहीं और नहीं बल्कि शुद्ध मानवीय कारण से उत्पन्न हुआ था। प्राकृतिक कानून और उसके सिद्धांत ने प्राकृतिक अधिकारों को जन्म दिया। मानव अधिकारों की उपस्थिति को ब्रिटिश बिल ऑफ राइट्स (1689), फ्रेंच डिक्लेरेशन ऑफ ह्यूमन राइट्स (1789), यूनाइटेड स्टेट्स बिल ऑफ राइट्स (1791), यूनिवर्सल डिक्लेरेशन ऑफ ह्यूमन राइट्स एक्ट (1948) में देखा जा सकता है। बल्कि मौलिक मूल अधिकारों पर भारतीय संविधान के भाग के तहत भी।

भारत का संविधान भाग , जिसमें ऐसे मौलिक अधिकारों की सूची डाली गई थी, को भारत के मैग्ना कार्टा के रूप में परिभाषित किया गया है। "राजनीतिक उथल-पुथल के उतार-चढ़ाव से उन मौलिक अधिकारों को हटाने के लिए ऐसे मौलिक अधिकारों की घोषणा प्रदान करने का उद्देश्य, उन्हें देश की विधायिका में बदलते बहुमत के नियंत्रण से परे रखना और उन्हें सभी परिस्थितियों में अनुल्लंघनीय बनाना है। उन मानव स्वतंत्रताओं, जैसे जीवन का अधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धर्म की स्वतंत्रता और अन्य प्रभाव प्रकार की स्वतंत्रता।

ऐसे मूल्य जो लोग अपने भीतर धारण करते हैं, वे भारत के संविधान के मौलिक अधिकारों द्वारा परिलक्षित होते हैं। इन अधिकारों का उद्देश्य व्यक्ति की मानवीय गरिमा की रक्षा करना और ऐसी स्थितियाँ स्थापित करना है जिसके तहत प्रत्येक मनुष्य अपने व्यक्तित्व को पूर्ण रूप से फलता-फूलता और विकसित करता है।

मौलिक अधिकार राज्य के लिए एक हानिकारक कर्तव्य है कि वह मानव स्वतंत्रता का उसके विभिन्न पहलुओं में उल्लंघन न करे। संविधान में मौलिक अधिकारों की घोषणा इस प्रकार सक्षम सरकार को उन अधिकारों की रक्षा करने और राज्य की गतिविधियों के दायरे को उचित दिशा में सीमित करने के लिए याद दिलाने का कार्य करती है।

भारत के संविधान में मानव स्वतंत्रता की उत्पत्ति और फिर उसे अपनाने के प्राथमिक उद्देश्यों में से एक नागरिकों को यह सुनिश्चित करना है कि देश में सरकार का शासन मौजूद है, न कि वह नियम जो मनमाना है या जो व्यक्तियों की सनक और सनक पर कार्य करता है। मौलिक अधिकार यह स्पष्ट करते हैं कि राष्ट्र सरकार की एक ऐसी प्रणाली को बाधित

Coordinator
IQAC-CELL
Govt. College Rajgarh (Alwar) Raj.
Principal
Govt. P. G. College
Rajgarh (Alwar) Raj.

दौसा जिलें में भूजल स्तर का बदलता स्वरूप

तुलसी राम सैनी

शोधार्थी, भूगोल विभाग, राज ऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

डॉ. जगफूल मीना

सह-आचार्य, भूगोल विभाग, राजकीय स्ना. महाविद्यालय राजगढ़, अलवर, राजस्थान

जल प्रकृति का अनुपम उपहार है। यह केवल मनुष्य ही नही अपितु हर प्राणी के लिए आवश्यक है। मानव जाति का कर्तव्य बनता है कि मानव ऐसी व्यवस्था करें ताकि सभी को यह उपहार आवश्यकतानुसार मिल सकें।

ऐसी कहावत है "जल ही जीवन है" और "बिन पानी सब सूना"

वर्तमान समय में पानी इतना महत्वपूर्ण हो गया है कि चिकित्सक पानी को एक दवा के रूप में मानते है चिकित्सक बीमार व्यक्तियों को सलाह देते है कि पानी खूब मात्रा मे पीना चाहिए। छोटे बच्चों को जल में इलेक्ट्रोल पाउडर एवं ग्लूकोज मिलाकर पिलाने की सलाह देते हैं।

सारांश

जल एक ऐसा प्राकृतिक संसाधन है, जिस पर न केवल मानव जाति अपितु सम्पूर्ण जीव जगत तथा वनस्पति भी निर्भर है।

राजस्थान भारत देश का क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य है। इसका अधिकांश भाग मुख्यत: शुष्क व अर्द्धशुष्क है, जहाँ वर्षा की औसत मात्रा 25 से.मी. से भी कम है। इस प्रकार राज्य में जल संसाधनो का महत्व व संरक्षण ओर अधिक बढ़ जाता है।

स्वस्थ जीवन के लिए पेयजल का साफ व सुरक्षित होना अनिवार्य है, संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 28 जुलाई 2010 को स्वच्छ जल और सफाई की सुविधा तक पहुँच प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार घोषित किया गया है।

शब्दकोश: जल पुनर्भरण, जल संरक्षण, जल बजट, अनुकूलम उपयोग, पर्यावरण, लवणीय सान्द्रता

प्रस्तावना

पृथ्वी का लगभग 97.2 प्रतिशत जल सागरें, महासागरों में खारें पानी के रूप में पाया जाता है। बर्फ के रूप में 2.15 प्रतिशत तथा 0.01 प्रतिशत नदियों एवं झीलों में एवं वायुमण्डल में 0.0001 प्रतिशत पाया जाता है।

पृथ्वी पर जल 386×10^6 कि.मी. जल भण्डार पाया जाता है। सन् 1954 में यूनेस्कों की एक रिपोर्ट में प्रकाशित किया गया है, कि पृथ्वी पर स्वच्छ जल की मात्रा केवल 35.03×10^6 घन कि.मी. है। इस प्रकार पृथ्वी पर ताजे जल के भण्डार का केवल मात्र 0.1 प्रतिशत हैं, जो मानव जाति के लिए अपर्याप्त हैं। शेष जल में लवणता की मात्रा अधिक पायी जाती है, जो कृषि कार्य व पीने के योग्य नही है।

भारत के पास सम्पूर्ण विश्व के जल का मात्र 4 प्रतिशत जल हैं। भूमिगत जल अत्यधिक दोहन के कारण लगातार नीचें गिरता जा रहा हैं। एक आंकडे के अनुसार भारत में प्रतिदिन लगभग 175 अरब घन मीटर भूमिगत जल निकाला जाता हैं, जोकि सम्पूर्ण विश्व जगत में सबसें ज्यादा हैं। लेकिन एक विडम्बना एक यह भी हैं कि भूमिगत जल के रिचार्ज की कोई व्यवस्था नही हैं।

भारत की आबादी, दिन-प्रतिदिन तीव्र गति से बढ़ रही है। जनसंख्या अधिक होने के कारण जल की आवश्यकता भी बढ़ रही हैं। एक आंकडे के अनुसार सन् 2000 में जल की आवश्यकता 750 अरब घन मीटर (750 जीसीएम मिलियम क्यूबिक मीटर) थी। सन् 2050 तक जल की आवश्यकता 1180 बीसीएम तक बढ़ जाएगी।

वर्ष 1950 में देश मे प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता 5000 घन मीटर प्रतिवर्ष थी। जो उपलब्धता 5000 घन मी. प्रतिवर्ष रह गयी हैं। प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता सन् 2050 तक 1000 घन मीटर प्रतिवर्ष से भी कम रहने के अनुमान हैं। जनसंख्या अधिक होने के कारण जल की माँग भी बढ़ रही हैं। 21वी सदी में गिरता भू-जल एक विकट समस्या बन गयी हैं।

जनसंख्या की अधिकता के कारण प्रतिवर्ष जल की माँग बढ़ गई हैं। देश में प्रति व्यक्ति जलापूर्ति प्रतिवर्ष 16589 घन मीटर हैं, जबकि राजस्थान के कई हिस्सो में 360 घन मीटर प्रतिवर्ष से भी कम हैं।

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
IQAC Cell
GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

Available online at **www.joac.info**

ISSN: 2278-1862

Journal of Applicable Chemistry

2022, 11 (1): 28-39

(International Peer Reviewed Journal)

Assessment of Water Quality Index of Ground Drinking Water in Ganeshwar and Chala Villages of Neemkathana Block of Sikar India

Santosh Kumar Verma[1], Ashok Kumar Kakodia[1] and Shiv Lal[2]

1, Govind Guru Tribal University Banswara-342001 **INDIA**

2, Rajasthan Technical University Kota-324010 **INDIA**

Email: vermask76@gmail.com

Accepted on 16th January, 2022

ABSTRACT

In this communication, the water quality index of Ganeshwar and Chala villages of Neemkathana block in Sikar District of Rajasthan state has been uttered. The water samples were collected from the sampling points strictly as per BIS recommendations. It is observed that the WQI of Ganeshwar village is found below 100 and in Chala Village is observed sometimes above the 100. The quality of water in Chala village is not a good quality for drinking purpose. The TDS level of Ganeshwar and Chala villages found higher than the acceptable limit of 500 mg/l. This study is given a direction for researchers in this area and facilitates to identify the sickness area due to these Physico-chemical parameters. The authors have been recommended the five stage R.O. type filtration system for reducing the Fluoride, Nitrate and TDS in these villages.

Graphical Abstract

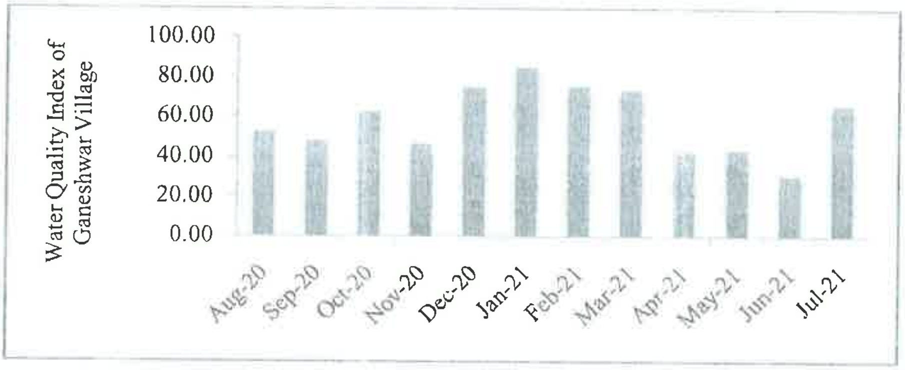

WQI of water in Ganeshwar Village of Neemkathana block.

Keywords: Water, Physico-chemical study, Water Quality Index.

Coordinator
Govt. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

INTRODUCTION

Water and air (Oxygen) are the survival needs of human body. As per Mitchell, the human adult body consists 60% of water where as the brain and heart are composed of 73%, lungs are about 83%, skin 64% muscles and kidneys are 79%, and even the bones are watery with 31%. According to Dr. Jeffrey

प्राचार्य
राजगढ़ (अलवर) राज.

International Journal of Trend in Scientific Research and Development
Online Open Access Journal ISSN: 2456-6470

Certificate of Publication

This Certificate is Proudly Presented for Honorable Achievement to

Dr. Anchal Meena

Assistant Professor, PG College,
Rajgarh, Alwar, Rajasthan, India

राजस्थान में पंचायती राज एवं महिला सहभागिता

Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development
Vol - 6 | Issue - 6 (Sep-Oct 2022). With Impact Factor 7.251, issued in the year of 2022

IJTSRD52004
Unique Paper ID

www.ijtsrd.com
Available Online

Dr. M. M. Patel
Chief Editor

आचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
GOVT. College, Rajgarh
राजकीय महाविद्यालय (अलवर)

International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 6, September-October 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

राजस्थान में पंचायती राज एवं महिला सहभागिता

Dr. Anchal Meena

Assistant Professor, PG College, Rajgarh, Alwar, Rajasthan, India

...राज अधिनियम-1992 लागू होने से गांव की महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। वर्तमान समय में महिला आरक्षण को कई राज्यों ने 33% से बढ़ाकर 50 प्रतिशत तक दिया है। जिससे पंचायती राज में महिलाओं की भूमिका और भागीदारी बढ़ी है। आपको बता दें, संविधान के 73वें संशोधन-1992 में महिलाओं को पंचायतों में एक तिहाई (33%) आरक्षण दिया गया है। वर्तमान समय में इस आरक्षण को कई राज्यों ने इस सीमा को बढ़कार 50 प्रतिशत तक दिया है। यही कारण है कि पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका और भागीदारी बढ़ी है। पहली बार 1959 में जब पंचायतों के विकास के लिए बलवंत राय मेहता समिति का गठन किया गया तो इस समिति ने महिलाओं के लिए भी भागीदारी की बात की। समय-समय पर महिलाओं की शक्तिकरण के लिए सरकार ने कई कदम उठाए हैं। लेकिन पंचायती राज अधिनियम-1992 ग्रामीण भारत की महिलाओं की सशक्तिकरण में मील की पत्थर साबित हुई है।

How to cite this paper: Dr. Anchal Meena "Panchayati Raj and Women's Participation in Rajasthan" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-6, October 2022, pp.993-997, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd52004.pdf

IJTSRD52004

Copyright © 2022 by author (s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

परिचय

...देश की आधी आबादी का गठन करने वाली महिलाएं ...जीवन के सामाजिक क्षेत्रों में अपने योगदान के ...मुख्यतः हमारी सामाजिक संरचना का एक अभिन्न अंग ...इस तथ्य के साथ नहीं कि भारतीय समाज में प्रचलित ...मूल्यों के लिंग पूर्वाग्रह के कारण भारत में ...के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जाता है। प्रमुख ...ने सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में ...की स्थिति और अवसरों की समानता से इनकार किया ...कोई संदेह नहीं है कि संविधान एक सामाजिक क्रांति ...करता है कानून के उपयोग के माध्यम से निर्देशित ...परिवर्तन का एक साधन है। महिलाओं के लिए स्थिति ...के लिए प्रस्तावना मौलिक अधिकारों और राज्य नीति ...सिद्धांतों में निहित विशिष्ट उद्देश्यों में से एक थी।[1]

...सामाजिक असमानताओं के साथ भारतीय समाज ...महिलाओं की स्थिति को प्रभावित करती है। ...के बावजूद भारत में महिलाओं की स्थिति वंचित ...में महिलाओं की स्थिति पर समिति ने एक ...तैयार किया जिसमें महिलाओं की घटती ...और भागीदारी पर प्रकाश डाला गया। रिपोर्ट 2 ...कि भारत में बहुसंख्यक महिलाओं को संविधान ...अधिकारों और अवसरों का आनंद नहीं

सामाजिक सांस्कृतिक सेटिंग ने परिवार और समाज में उनकी भूमिका को सीमित कर दिया और उन्हें राजनीति के पिछवाड़े में रखा। भारत गाँवों का देश है जहाँ गरीबी दर बहुत अधिक है। ग्रामीण महिलाएं सबसे ज्यादा वंचित स्थिति में हैं। देश की कुल महिला आबादी का लगभग 75% ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। मानव विकास संकेतक के किसी भी माध्यम से, ग्रामीण महिलाओं को उसके शहरी समकक्ष की तुलना में नुकसान होता है। ग्रामीण महिलाओं के लिए सूचना, संपत्ति और जीवन के अवसर कम हैं। उनकी उत्पादक और प्रजनन भूमिकाएँ काफी हद तक अदृश्य रहती हैं। भारतीय ग्रामीण महिलाओं के लिए जीवन के हर पहलू में सशक्तिकरण ही एकमात्र उत्तर है। रणनीति सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और कानूनी जैसे सभी मोर्चों में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण अपनाना है।

शोधकर्ता का मुख्य ध्यान कई क्षेत्रों में से एक का अध्ययन करना है जहां पंचायत राज संस्थानों में भागीदारी के संदर्भ में राजनीतिक दुनिया में निर्णय लेने के क्षेत्र (यानी) महिला सशक्तिकरण आवश्यक है। इस अध्ययन ने राजस्थान चित्रण के माध्यम से ग्राम पंचायतों में महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण की प्रक्रिया की जांच करने की मांग की है।[2]

भारत में महिलाएं अभी भी पुरुष वर्चस्व के तनाव के दौर से गुजर रही है। इसलिए, भारत के विकास के लिए महिलाओं का

प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
IQAC-CELL
GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

शोध पत्रिका

वर्ष 9 अंक 1 फरवरी, 2022

अर्द्धवार्षिक द्वि-भाषी

सामाजिक एवं सांस्कृतिक समन्वय के लिए
समर्पित एक बहु-विषयात्मक शोध पत्रिका

website : www.sanskritikpravah.com

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान
बी-19, मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001

प्राचार्य
राजकीय [illegible] महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator / समन्वयक
IQAC
GOVT. College Rajgarh (Alwar) (Raj.)

प्राचीन भारतीय वाङ्मय में राष्ट्रीय एकता के तत्व

डॉ. वर्षा खण्डेलवाल
असिस्टेंट प्रोफेसर-संस्कृत
राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़
अलवर (राजस्थान)

सार-संक्षेप

प्राचीन भारतीय वाङ्मय भारतीय संस्कृति को वर्णित करने का आधार है। प्राचीन वाङ्मय की बात करें तो सर्वप्रथम हमें वेदों की तरफ रुख करना पड़ता है। वेदों में सभी प्राणियों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया गया है। यह कल्याण का मार्ग राष्ट्रीय एकता के द्वारा पार किया जा सकता है। राष्ट्रीय एकता ही एक राष्ट्र के सभी प्राणियों को एकता के सूत्र में आबद्ध करती है। इससे ही सभी प्राणियों में आपसी प्रेम, सहयोग, निष्ठा, धर्म, कर्तव्यपरायणता, बन्धुत्व आदि की भावना का विकास होता है। राष्ट्रीय एकता 'राष्ट्र' के सुनिर्दिष्ट अर्थ के साथ-साथ देशप्रेम को अभिव्यक्त करता है। वेदों में राष्ट्र के प्रति प्रेम व ऐक्य भाव के उदाहरण भरे पड़े हैं। प्राचीन भारतीय वाङ्मय में 'सर्वात्मभाव' को स्वीकार किया गया है। व्यष्टि व समष्टि की एकता के मन्त्र निबद्ध किये गये हैं। वैदिक समाज सामाजिक सद्भावना से पूर्ण था। सामाजिक दृढ़ता व समानता से राष्ट्र के सभी नागरिकगण अपने उद्देश्यों को पूर्ण करते हुए सन्मार्ग की ओर चलते रहे, यही कामना वेदों में की गई है। यह बताया गया है कि स्नेह, समता, एकता, सौहार्द आदि सुख-शान्ति के प्राणतत्व हैं। अथर्ववेद में राष्ट्र से सम्बन्धित प्रेम भाव पर अत्यधिक बल दिया गया है तथा शत्रुओं को नष्ट करने के प्रयत्न पर जोर दिया गया है। राष्ट्रीय एकता के लिये आवश्यक यथार्थ बोध, ज्ञान, त्याग, बलिदान और सत्यनिष्ठा जैसे आत्मिक गुणों का परिचय अथर्ववेद में हमें मिलता है। राष्ट्रीयता की

प्राचार्य
Coordinator
IQAC-CELL

ISSN 2320-4540

The Public : Problems and Solutions

An International Refereed & Peer-Reviewed Research
Journal Related to Higher Education for all Subjects

Vol. -11 No. IV
October- December 2022
SLRF Impact Factor : 2.362

Editor in Chief
Dr. Mukesh Kumar Malviya

Principal
Govt. P. G. College
Rajgarh (Alwar) Raj.

Coordinator
IQ AC-CELL
GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

Principal
Govt. P
Rajgarh,

CONTENTS

Growth of science in British India *Dr subhash Yadav ** Dr. Vikas Nautiyal	1–6
Growth of science in British India * Dr. Om Prakash Meena	7–14
Dramaturgy in Theatre of the Absurd * Rakesh kumar meena	15–22
वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में गाँधीवादी विचारधारा की प्रांसागिकता *डॉ. मीनाक्षी मीना	23–26
महाभारत में पंचरत्नों की सामयिक उपयोगिता *डॉ. सुमेर सिंह बैरवा	27–33
वैदिक कालीन मनोरंजन के साधन * डॉ. नरेश कुमार मीना	34–36
महाभारत में धर्म व्यवस्था : एक अध्ययन *योगेन्द्र सिंह	37–42
आत्मनिर्भर भारत : समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ *डॉ. सीमा हटीला **मनीषा चौधरी	43–48
करौली जिला का भौतिक स्वरूप *चिरंजी लाल रैगर	49–54
सांस्कृतिक पत्रकारिता में माखनलाल चतुर्वेदी का योगदान * कपिल देव कुण्डारा	55–59
राजस्थान के विकास में ऊर्जा प्रौद्योगिकी की भूमिका * शिव शर्मा	60–65
महिला सशक्तिकरण हेतु नीतियाँ एवं कार्यक्रम *संजय बमणावत	66–70
वायुमण्डल में मीथेन का स्तर : एक अध्ययन * गजेन्द्र कुमार महावर	71–74
लोक साहित्य की दृष्टि में मेवाड़ की सभ्यता एवं संस्कृति *कविता वर्मा	75–78
प्रभा खेतान के हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध आयाम *डॉ. पंकज कुमार	79–85
महिला एवं बाल कल्याण कार्यक्रमों का अध्ययन *भूपेन्द्र कुमार मीना	86–95
भारत में चुनाव पर सरकारी खर्च : एक अवलोकन * डॉ. हरीश कुमार	96–99
आयुष्यमान भारत योजना का जन स्वास्थ्य पर प्रभाव * डॉ. सुमन भाटिया	100–103
ग्रामीण महिलाओं को सशक्तिकरण में प्रधानमंत्री आवास योजना की भूमिका * डॉ. सुशीला मीना	104–106
सतत विकास का लक्ष्य और भारत * डॉ. अरविंद चौधरी	107–111
भारतीय उत्पादों का भौगोलिक संकेतक : एक अध्ययन * तबस्सुम आरा	112–116
कोटा में नगरीय विकास व पर्यावरण अवनयन : एक अध्ययन * प्रेरणा जोशी	117–124

Coordinator
IQ AC-CELL
GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Raj.
Principal
Govt. P.G. College
Rajgarh (Alwar) Raj.

Dramaturgy in Theatre of the Absurd

* Rakesh kumar meena
Assistant Professror, English
Govt. P.G. College Rajgarh (Alwar)

Abstract : The evolution of the Theatre of Absurdity goes back to the early era of the post World War. The conspicuous feature of the absurd plays is the struggle that the protagonist goes through - he has to deal with the loss of his identification and tries in vain to upgrade himself to the deteriorating condition of the prevalent society. Though this special kind of drama was first introduced through the works of Beckett, Camus or Ionesco, its influence soon reached the eastern countries of Russia and India. The American playwrights came up with new techniques, quite anti-theatrical in nature, to depict the absurdity of human existence and the daily bout of anxiety that they have to go through. This loss of self was a new idea in the forefront of theatre and dealt with the baffling problems that otherwise could have gone unanswered. Jean-Paul Sartre shows his skepticism: 'The word is now so loosely applied to so many things that it no longer means anything at all.'

Preface

After World War II, people were engulfed by a sense of anxiety and hopelessness. The ruckus everywhere made the people unsure of themselves and gradually led them to depression. It is at this time that the playwrights thought of a new trend of drama to portray the struggle of the middle-class where they would show people's constant fight for strong hold of ground under their feet. No one could ignore the corrosion of self that slowly became the unavoidable reality. This was a time when the value of existence was measured more by its precedence than by its essence. While the concept of truth was reduced to nothing but an illusion, consciousness, mind and soul were treated as unimportant elements. Looking at their surroundings, the playwrights were forced to believe that failure would be the inevitable fate of a man since he cannot succeed in any project whatsoever. Hence, the rise of the Theatre of Absurdity marked a sharp contrast to that of the prevalent realistic drama. As people were shocked to their core to see this new kind of drama, Martin Esslin comments: 'These plays flout all the traditional and conventional notions of the plot, character, dialogue, theme, setting, and structure mainly.' pp.83(Esslin1)

In every work of absurdity ; there cannot be any purpose worth mentioning. In this scenario, man has lost all hope, and his dejected state has led him to believe that his struggles will yield nothing fruitful. With the evolution of absurdist drama, the notions and beliefs of the old ways have been scrapped throughout so that the new experiment gets the place to settle in. Right in the beginning, Sartre and Camus are the ones who had dramatized creative themes to deal rightly with the grappling picture of anxiety and absurdity of the modern age. Critics and playwrights alike describe the absurdist nature as something that is a regular part of human life. From morality to comedy to having no plot, an absurd play can take any form to depict the misery surrounding a person.

Before the absurdist plays came into vogue, morality plays dominated the theatre. People were accustomed to seeing what was right in the most conventional way and made to believe that the dark things of life must not be spoken about. Hence, it is very obvious that the new kinds of absurd plays met with a terrific reaction from the audience. Merleau-Ponty opines that 'we are involved in the world and we do not succeed in extricating ourselves from it in order to achieve consciousness of the world.' (Ponty 13) They did not expect to see immorality or infidelity being portrayed on stage. Being on the opposite side of the stage, outrageous human reactions were natural since they were utterly bewildered and aghast at the audacity of the playwrights. Most of the onlookers did not know how to react; they were left dumbfounded. The plays that flouted all conventional and traditional notions baffled the audience from the

Coordinator
IQAC
Govt. College Rajgarh (Alwar) Raj.
Principal
Govt. P.G. College
Rajgarh (Alwar) Raj.

UGC Care Listed
त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
ISSN-2321-1504 Nagfani
RNI No. UTTHIN/2010/34408

वर्ष-12, अंक-41, अपैल - जून 2022

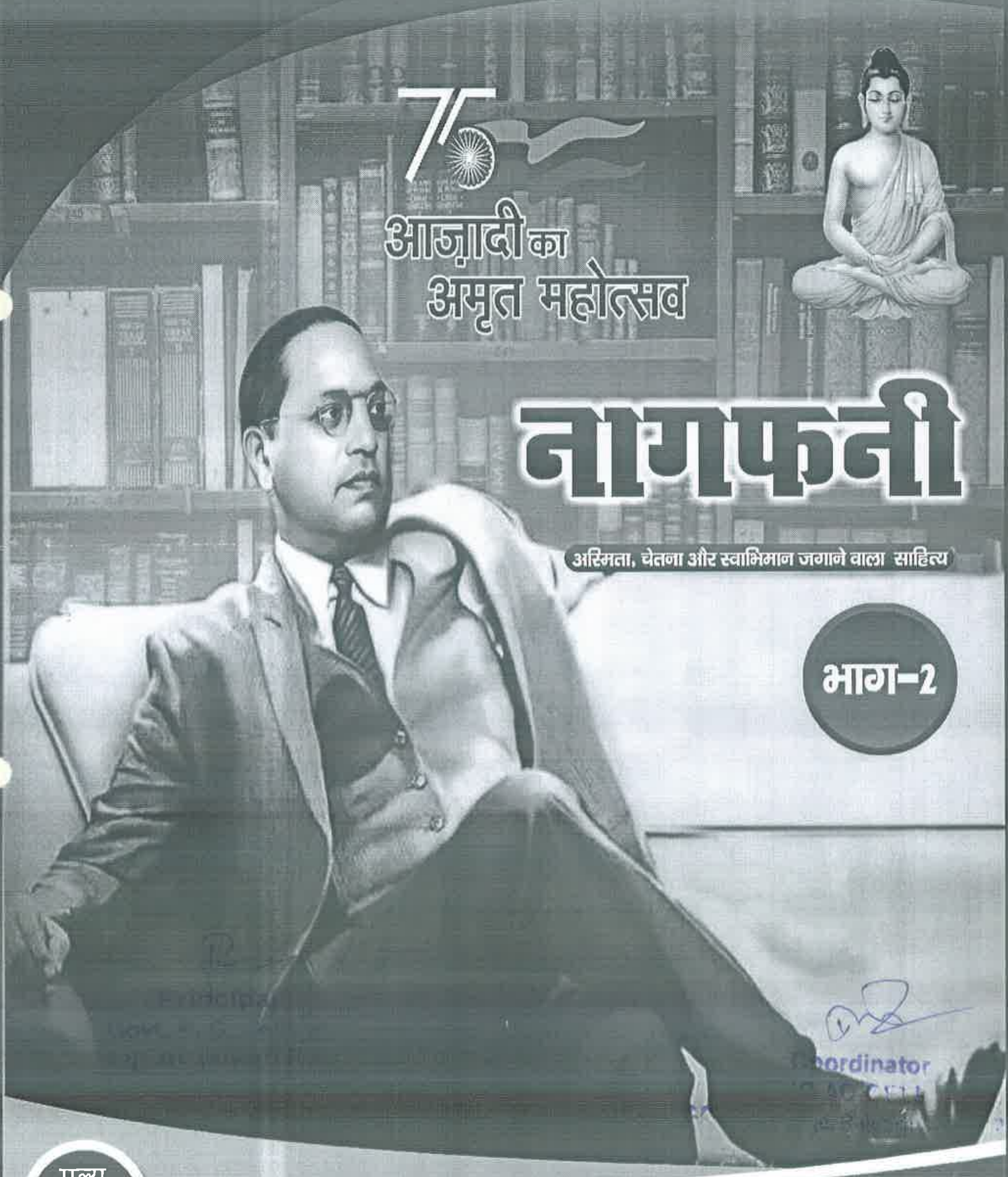

मूल्य
₹ 150/-

नागफनी

वर्ष-12 अंक 41,अप्रैल-जून-2022 भाग-2

अनुक्रम | पृष्ठ क्रमांक

संपादकीय 04

साहित्यिक विमर्श

1. लोक-साहित्य एवं इसके विविध रूप-डॉ.निधि शर्मा 5-7
2. वर्तमान संदर्भ में कबीर के काव्य में सामाजिक दर्शन:एक अध्ययन -डॉ.मो.मजीद मियाँ 7-8
3. आधुनिक हिन्दी कविता का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान-डॉ.पवन कुमार शर्मा&डॉ.सुनील 9-10
4. डूब: मनुष्यता और विकास के उन्माद की लड़ाई-अपर्णा ए. 10-12
5. सामाजिक दुर्दशा का यथार्थ दस्तावेज : गिलिगडु-डॉ.संतोष बबन पगार 12-14
6. राजनीति संस्था और शरद जोशी एवं उनके समकालीन व्यंग्यकार-राजेश कुमार शर्मा&डॉ. राज नारायण शुक्ल 15-17
7. हिंदी सिनेमा में कमलेश्वर का अवदान-डॉ.श्रीमती विनोद कालरा 18-20
8. प्रेम की वेदी : एक अनुशीलन-मिन्नु जोसेफ 21-22
9. ग्राम्य जीवन के विभिन्न पक्ष-पवन कुमारी 23-25
10. बदलते हुए राजनीतिक परिदृश्य : 'एक हत्या की हत्या' नाटक के संदर्भ में-चिप्पी एम.आर. 26-28
11. ...न्दी पत्रकारिता के बदलते स्वरूप-कनक राज पाठक 28-30
12. महीप सिंह की कहानियों में मानवीय सम्बंध-डॉ.प्रवीन कुमार 30-31
13. मणिपुरी बाल साहित्य: उद्भव और विकास- एस. साधना चनु 32-34

स्त्री विमर्श

1. हिंदी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में नारीवादी विचार-डॉ.पंडित बन्ने 35-36
2. सेज पर संस्कृत उपन्यास में चित्रित-स्त्री-डॉ.आशीष 36-38
3. दासताएँ औरत (वीना वर्मा की नज़र से)-डॉ.चमकौर सिंह 38-40
4. जुलूस उपन्यास के स्त्री पात्र-डॉ.माया सगरे लक्का 41-43
5. विस्थापन का दर्द : कश्मीरी लेखिकाओं की संघर्ष गाथा-ममता माली &डॉ. जयश्री सिंह 44-46
6. 'कठगुलाब':एब्यूज्ड स्त्री चिंतन से आगे की कथा- डॉ.वीरेन्द्र प्रताप 46-49

दलित विमर्श

1. गुरु रैदास का पाठ–संपादन-डॉ.राजेंद्र प्रसाद सिंह 50-51
2. श्यौराज सिंह बेचैन की कहानियों में संवेदना के विविध रूप :'हाथ तो उग ही आते हैं ' कहानी संग्रह के विशेष संदर्भ में-शमीम पी 52-53
3. दलित जीवन की भयानक त्रासदी : 'सद्गति'-डॉ.पान सिंह 54-56
4. जयप्रकाश कर्दम के उपन्यास 'छप्पर' में सामाजिक चेतना-अजय कुमार चौधरी 57-59
5. ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में 'दलित आत्म-संघर्ष'-मु.जाहिद रजा सिद्दीक 59-62

आदिवासी विमर्श

1. ...ोज केरकेट्टा के 'अबसिब मुरडअ' में आदिवासी प्रतिरोध-कु. रेशम सोनकर 63-65

विविध विमर्श

1. भारतीय बौद्ध दर्शन का कालजयी विश्वकाव्य : धम्मपद-प्रो.डॉ.शशिकांत 'सावन' 66-69
2. अटल बिहारी वाजपेयी का जीवन दर्शन-कैलाश कुमार&डॉ शंकर मुनि राय 70-72
3. कांग्रेस पार्टी और भारतीय राजीनीति:एक सूक्ष्म विश्लेषण-पूरन मल मीना 72-74
4. जनसंख्या भूगोल-भविष्य का भूगोल-वरुण यादव&डॉ.सालिक सिंह 75-76
5. भारत में कृषि आय पर कर: संभावनाऐ और चुनौतियों का मूल्यांकन-मुकेश कुमार मीना&विनोद सेन 77-79

English Discourse

Canonical Literary Discourse

1. A Brief Analysis of Diversity in Indian Culture and Traditions in Jayanta Mahapatra's Poetry Collection, 'A Rain of Rites'-**Manabodh Luhura &Dr. Ranjana Das Sarkhel** 80-82
2. Past Haunts Present: A Study of Mahesh Dattani's Where Did I Leave my Purdah?-**Dr. Santosh Kumar Sonker&Dr. B. Krishnaiah** 83-85
3. The Male Identity Crisis in Sarnath Banerjee's Graphic Novel *Corridor*: A Deconstructive Study-**Sonia Sumbria&Dr.Meenakshi Rana** 86-89
4. Refelections of Cuisine and Costumes in Naveen Patnaik 'A Second Paradise'- **Rajkumar Baghel &Dr.Ranjana Das Sarkhel** 90-93

Coordinator IQ AC-CELL ... College, Rajgarh (Alwar) ...
Principal Govt. P. G. College Rajgarh (Alwar) Raj.

1. कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय रायपुर,
2. तकनीकी विश्वविद्यालय दुर्ग,
3. पंडित सुंदरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय बिलासपुर।

सन् 1986-87 में जब अटल जी बस्तर दौरे पर आए थे तो वहाँ के वनवासियों और वन संपदा को देखकर बहुत प्रभावित हुए थे। उन्होंने तभी से मनसा बना ली थी की छत्तीसगढ़ को अलग राज्य का दर्जा देना है। वे इस बात को महसूस करते थे की छत्तीसगढ़ में प्रचुर वन संपदा, खनिज संसाधन पर्याप्त उपज तथा जल स्त्रोत होने के बाद भी यहाँ के लोग अत्यंत पिछड़े हुए हैं। छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण प्रदेशवासियों के लिए एक बड़ी सौगात थी। यह प्रदेश के जनता के संघर्ष का सम्मान था। वाजपेयी जी छत्तीसगढ़िया के स्वाभिमान को बेहतर तरीके से समझते थे। उनके इस महान कार्य के लिए छत्तीसगढ़ की संपूर्ण जनता उनका हमेशा कृतज्ञ एवं आभारी रहेगा तथा उनके मानस पटल में अटल जी चिरकाल तक ससम्मान स्मरणीय रहेंगे।

वाजपेयी जी का राजनीति से सन्यास तथा मृत्यु:- सन् 2005 में वाजपेयी जी ने सक्रिय राजनीति से संन्यास लेने की घोषणा कर दी। सन् 2007 में उनकी अंतिम सभा 25 अप्रैल को कपूरथला चौराहे पर भाजपा उम्मीदवारों के समर्थन में हुई थी लेकिन उसके बाद उनका स्वास्थ्य खराब होने पर कई दिनों तक वेंटिलेटर पर रखा गया था। ठीक होने पर उन्हें अस्पताल से छुट्टी तो दे दी गई किंतु उसके बाद के वर्षों में उन्हें स्वास्थ्य संबंधी गंभीर परेशानियाँ लगातार बनी रही। अंततः वे 16 अगस्त सन् 2018 को समस्त देशवासियों को अटल शून्य में छोड़कर चिर निद्रा में विलीन हो गए।

सादा जीवन उच्च विचार:- सादा जीवन व्यतीत करने वाले अटल जी सादगी एवं सरलता के जीवंत प्रतिमा थे। बचपन से ही पढ़ने-लिखने के शौकीन थे। उन्हें खाली बैठना बिल्कुल पसंद नहीं था। जब भी समय मिलता वे अपनी मनपसंद पुस्तक हाथ में उठा लेते। भोजन बनाने में उन्हें काफी रूचि थी, अपने हाथों से परोसकर खिलाने में उनको अत्यधिक प्रसन्नता होती थी। वे खिचड़ी के शौकीन थे। हिंदी कवियों में महाप्राण निराला भोजन बनाने और खिलाने के लिए विशेष प्रसिद्ध थे।

अटल जी देश के महान नेता थे किंतु साहित्य प्रेमियों को उनका कवि रूप ही अधिक प्रिय है। राजनीति में रहते हुए भी वे अजातशत्रु थे। उन्होंने आजीवन अविवाहित रहकर राष्ट्र सेवा करने का संकल्प लेकर अपना सर्वस्व देश हित में समर्पित करने का प्रण लिया था।

उपसंहार:- 'भारत रत्न', राजनेता एवं कवि अटल बिहारी वाजपेयी का व्यक्तित्व श्रेष्ठ मानवीय गुणों की जीवंत प्रतिमा है। वे एक आदर्श राजनेता के रूप में दलीय मतभेदों से परे होकर राष्ट्र की सर्वोच्च हित में चिंता करते हैं, तो दूसरी ओर एक कवि के रूप में वे देश के सभी वर्गों को विश्वबंधुत्व का संदेश देते हुए कदम मिलाकर चलने की प्रेरणा देते हैं। कवि और राजनेता दोनों ही रूपों में उनके रग-रग में राष्ट्रभक्ति ही समाई हुई है क्योंकि मूलतः वे एक राष्ट्रपुरुष ही है।

****

संदर्भ:-

1. न दैन्यं न पलायनम् - सं० डॉ० चन्द्रिका प्रसाद शर्मा, किताबघर प्रकाशन 4855-56/24, बारहवाँ संस्करण, 2013, अंसारी रोड दरीयागंज, नयी दिल्ली।
2. हार नहीं मानूंगा - सं० विजय त्रिवेदी, हार्पर कालिंग पब्लिशर्स, ए-75,सेक्टर 57,नोएडा 201301, उत्तरप्रदेश, भारत।
3. नयी चुनौती नया अवसर - सं० चन्द्रिका प्रसाद शर्मा, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली।
4. विचार बिन्दु सं० चन्द्रिका प्रसाद शर्मा, किताबघर प्रकाशन, अंसारी रोड दरीयागंज, नयी दिल्ली।
5. कुछलेख कुछ भाषण - सं० चन्द्रिका प्रसाद शर्मा, किताबघर प्रकाशन, अंसारी रोड दरीयागंज, नयी दिल्ली।
6. बिन्दु-बिन्दु विचार - सं० चन्द्रिका प्रसाद शर्मा, किताबघर प्रकाशन, अंसारी रोड दरीयागंज, नयी दिल्ली।
7. शक्ति से शांति - सं० चन्द्रिका प्रसाद शर्मा, किताबघर प्रकाशन, अंसारी रोड दरीयागंज, नयी दिल्ली।

Principal
Govt. P. G. College
Rajgarh (Alwar) Raj.

कांग्रेस पार्टी और भारतीय राजीनीति:एक सूक्ष्म विश्लेषण

पूरन मल मीना
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
राजनीति विज्ञान, विभाग
राजकीय महाविद्यालय राजगढ़, अलवर (राज.)

भारत में लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली संविधान द्वारा अंगीकृत किया गया है.विगत 15वीं लोकसभा के चुनाव में चुनाव आयोग ने केवल 7 राजनीतिक दलों को राष्ट्रीय दल या अखिल भारतीय दल के रुप में मान्यता प्रदान की थी। भारत निर्वाचन आयोग के मई 2023 के नवीनतम प्रकाशनों और बाद की अधिसूचनाओं के अनुसार, 6 राष्ट्रीय दल, 54 राज्य दल और 2,597 गैर-मान्यता प्राप्त दल हैं। चुनाव लड़ने वाली सभी पंजीकृत पार्टियों को चुनाव आयोग द्वारा प्रस्तावित उपलब्ध प्रतीकों की सूची में से एक प्रतीक चुनने की आवश्यकता है। भारत निर्वाचन आयोग के मई 2023 के नवीनतम प्रकाशनों और बाद की अधिसूचनाओं के अनुसार, 6 राष्ट्रीय दल, 54 राज्य दल और 2,597 गैर-मान्यता प्राप्त दल हैं। राजनैतिक दल लोगों का एक ऐसा संगठित गुट होता है जिसके सदस्य किसी साँझी विचारधारा में विश्वास रखते हैं या समान राजनैतिक दृष्टिकोण रखते हैं। यह दल चुनावों में उम्मीदवार उतारते हैं और उन्हें निर्वाचित करवा कर दल के कार्यक्रम लागू करवाने का प्रयास करते हैं। चुनाव लड़ने वाली सभी पंजीकृत पार्टियों को चुनाव आयोग द्वारा प्रस्तावित उपलब्ध प्रतीकों की सूची में से एक प्रतीक चुनने की आवश्यकता है। भारत में लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली संविधान द्वारा अंगीकृत किया गया है.विगत 15वीं लोकसभा के चुनाव में चुनाव आयोग ने केवल 7 राजनीतिक दलों को राष्ट्रीय दल या अखिल भारतीय दल के रुप में मान्यता प्रदान की थी। इन राष्ट्रीय दलों के अतिरिक्त 46 राज्य स्तरीय अमान्यता प्राप्त पंजीकृत दल तथा अन्य दल भी हैं। उस दौर में राजनीतिक मानचित्र में केवल 7 राजनीतिक दलों को राष्ट्रीय दल या राजनीतिक दल के रुप में तथा 46 राजनीतिक दलों को राज्य स्तरीय दल के रुप में मान्यता प्राप्त हैं। भारतीय कांग्रेस दल देश का सबसे पुराना और सशक्त दल है। इस दल की स्थापना सेवानिवृत अंग्रेज अधिकारी एम.ओ. ह्यूम के प्रयासों के परिणामस्वरुप दिसम्बर 1885 ई. को मुम्बई में की गई थी। इसी दल ने राष्ट्रीय आन्दोलन को सक्रिय संचालन करके भारत देश को स्वतंत्रता दिलवाने में अपनी अहम भूमिका का सफल निर्वहन किया था। हमारे देष की आजादी दिलवाने से पहले राष्ट्रीय कांग्रेस में सभी विचारधारा वाले व्यक्ति सम्मिलित किए गए थे और स्वतंत्रता मिलने के बाद भी राष्ट्रीय कांग्रेस का लगभग यही वर्चस्व भारतीय जन मानस में रहने का स्वरुप बना रहा। सन् 1948 में महात्मा मोहन दास कर्मचंद गांधी और सन् 1950 में सरदार वल्लभ भाई पटेल, जिसे लौह पुरुष कहा जाता है के निधन के बाद जवाहर लाल नेहरु के नेतृत्व में कांग्रेस दल ने समाजवाद और पंथ निरपेक्षता को अपना लक्ष्य घोषित किया समाज में वैज्ञानिक अवधारणा को इस सोच से बल मिला । औद्योगिक क्षेत्र में राज्य को सक्रिय भूमिका और सामूहिक कृषि या कृषि में सहकारिता के प्रस्ताव पारित किए गये थे। इन सभी के अलावा सन् 1961 में ही पंचवर्षीय योजनाओं के रुप में आर्थिक विकास के लिए नियोजन के मार्ग को अपनाया गया था। उसी दौर में अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में यानि विदेश निति में पं. जवाहर लाल नेहरु ने साम्राज्यवाद का घोर विरोध किया और विश्व बंधुत्व के लिए अनुपम कार्य किया और पंचषील के सिद्धांत के द्वारा नेहरु ने विश्व में शांति, सौहार्द एवं भाईचारा की स्थापना के लिए विभिन्न राष्ट्रों में सहयोग की भावना का प्रचार किया और विश्व बंधुत्व के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। 27 मई, 1964 को पं. जवाहर लाल नेहरु के निधन होने के बाद लाल बहादुर शास्त्री कांग्रेस दल के नेता चुने गये और भारत के दूसरे कांग्रेसी कार्यकारी प्रधानमंत्री बने। लाल बहादुर शास्त्री

Coordinator IQAC-CELL GOVT. College Rajgarh